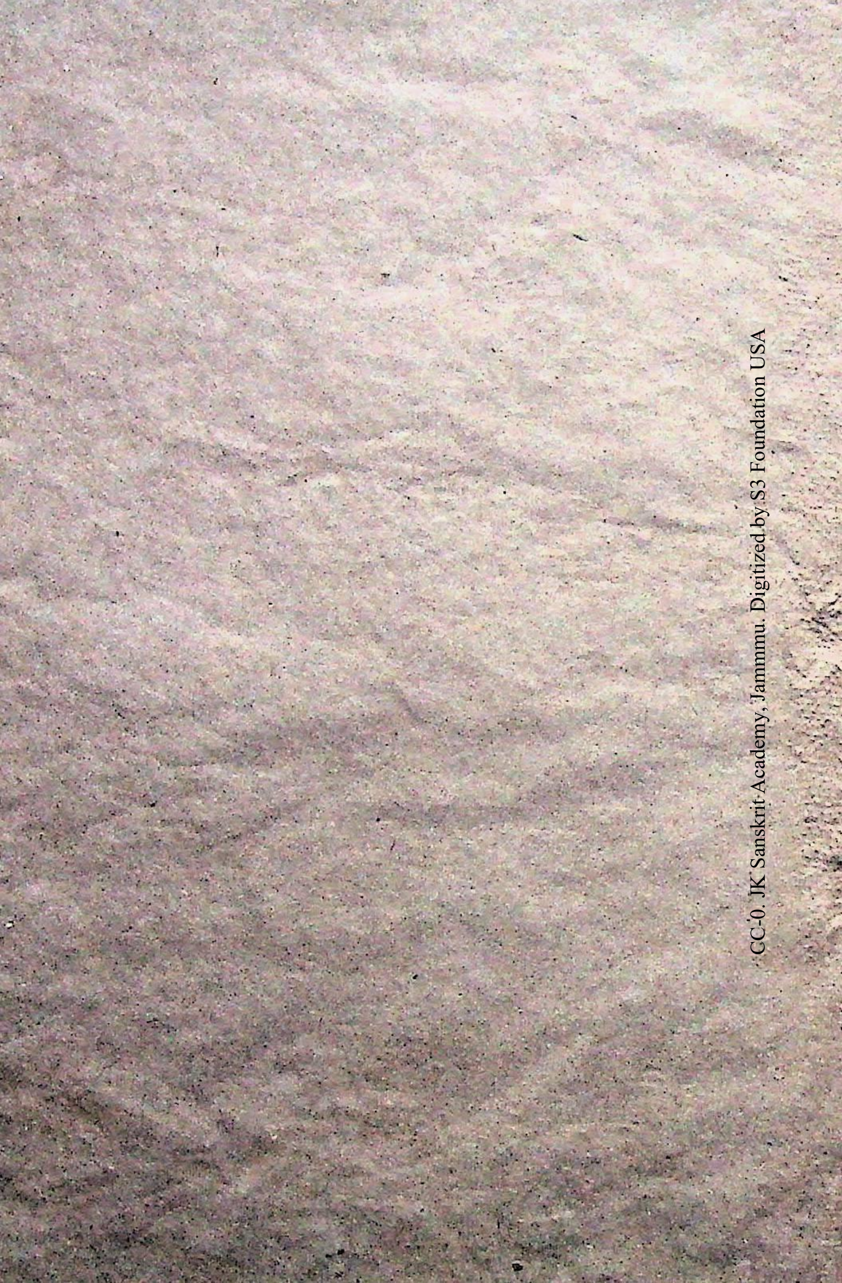
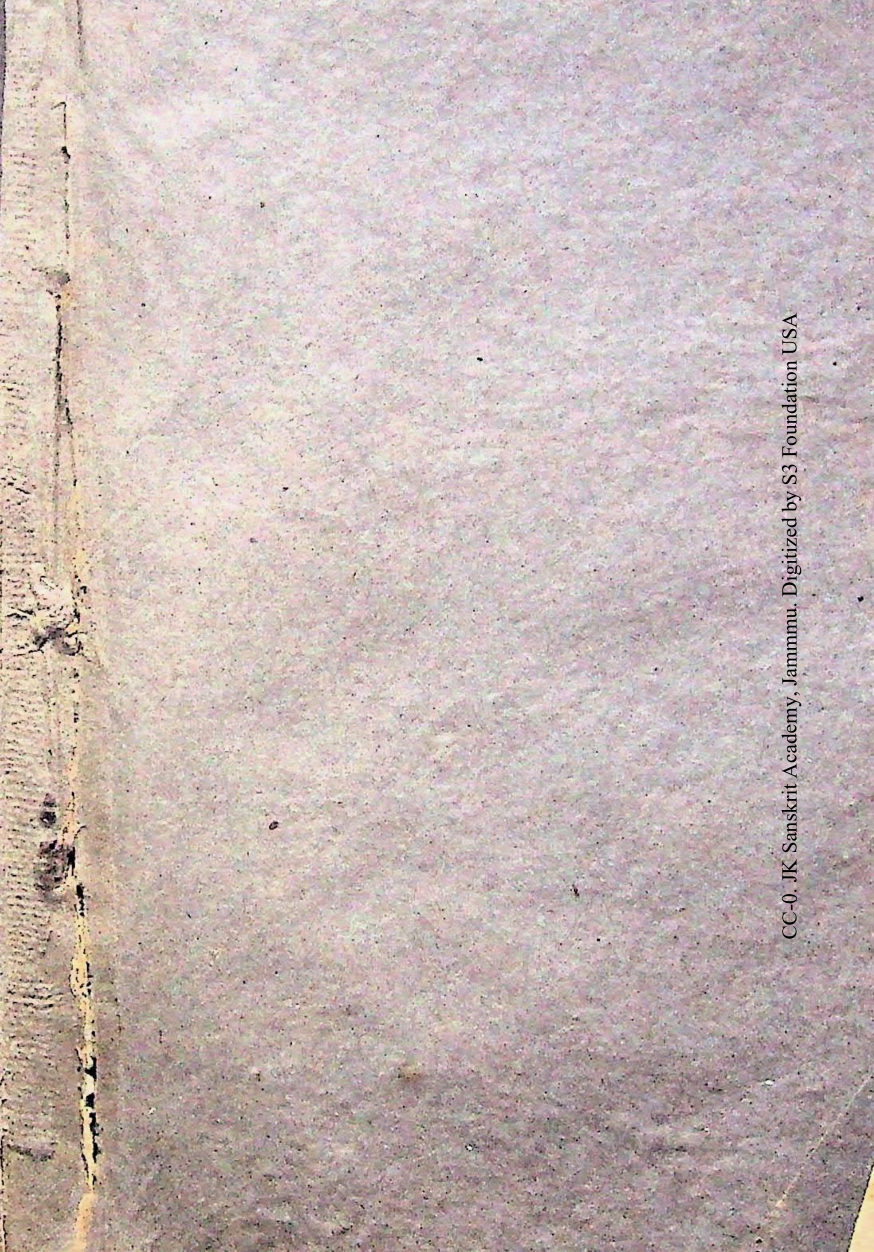
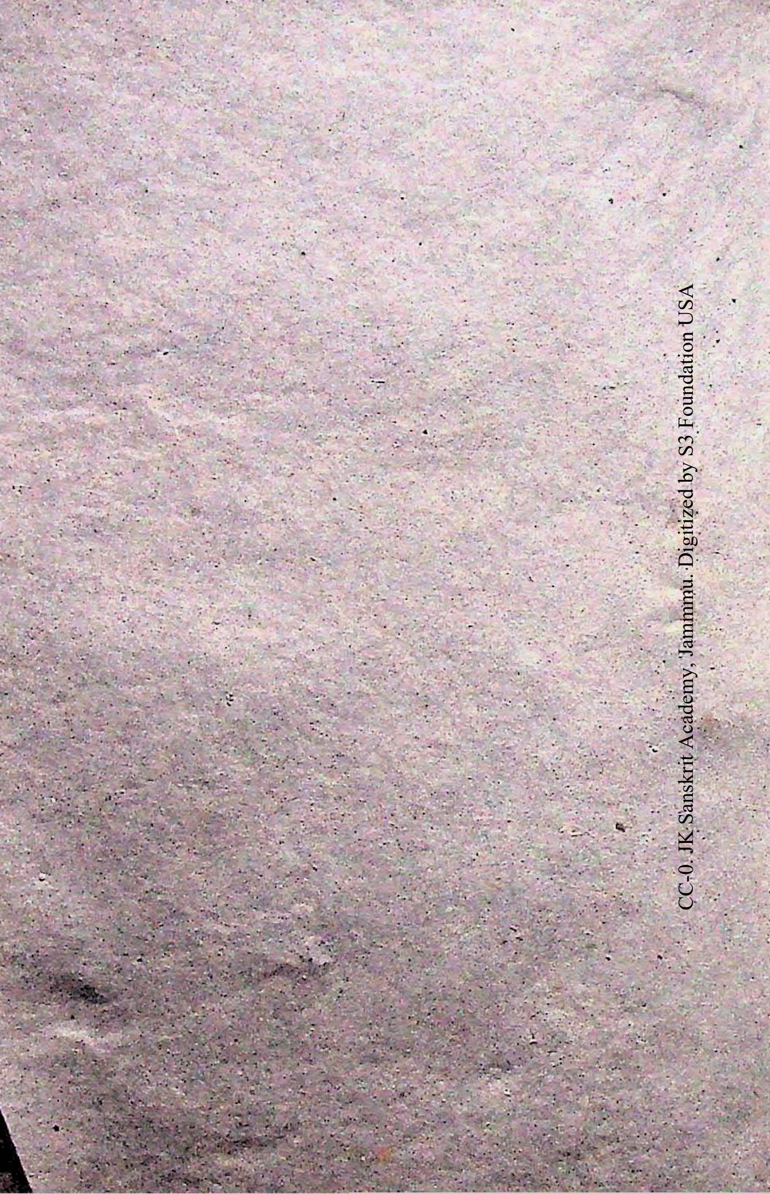










श्री चौखम्भा राजसेवा ग्रन्थमाला ६२

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

(रुद्रयागस्य सप्तभिः प्रकारैर्हवनमन्त्रविधिसहिता)

सम्पादक

याज्ञिकसम्राट्

पण्डित श्रीवेणीरामशर्मा गौड



चौखम्भा ओरियन्टालिया

वाराणसी दिल्ली

प्रकाशक

चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० १०३२

गोकुल भवन, के० ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन

वाराणसी–२२१००१ (भारत)

टेलीफोन : ६३३५४ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा— बंग्लो रोड, ९-यू० बी०

जवाहर नगर

(निकट किरोड़ीमल कालेज)

दिल्ली-११०००७

फोन : २९११६१७, २३८७९०

द्वितीय संस्करण 1990

मूल्य रु० १०–००

मुद्रक— श्रीगोकुल मुद्रणालय, वाराणसी

CHAUKHAMBHA RAJASEVA SERIES
NO. 62

ŚUKLAYAJURVEDĪYARUDRĀṢṬĀDHYĀYĪ

[having seven kinds of oblations with hymns of Rudrayāma]

By

Pt. BEṆĪRĀMA ŚARMĀ GAUḌA
Vedācārya, Kāvyatīrtha
Formerly Head of the Veda section
Goenaka Sanskrit College, Varanasi

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA
A House of Oriental and Antiquarian Books
VARANASI DELHI

Publishers :

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA
A House of Oriental and Antiquarian Books
P. O. Chaukhambha, Post Box No 1032
Gokul Bhawan, K. 37/109, Gopal Mandir Lane
VARANASI-221001 (India)
Telephone : 63354 Telegram : Gokulotsav

Branch :

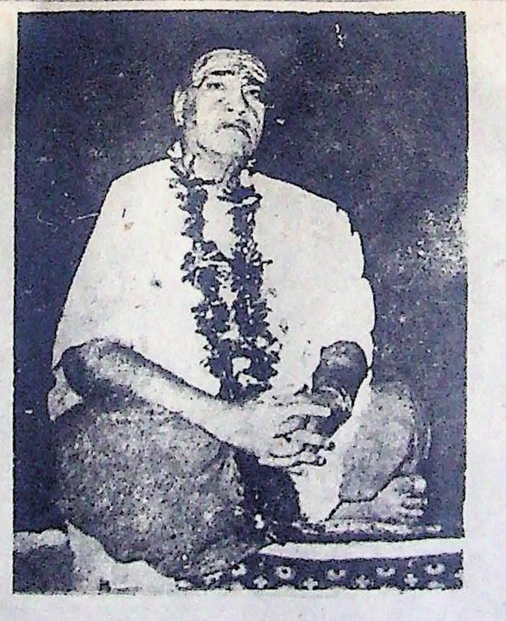
Chaukhambha Orientalia
Bungalow Road, 9 U.B. Jawahar Nagar
(Near Kirorimal College)
DELHI-110007
Phone :—2911617, 238790

Printers—Srigokul Mudranalaya, Varanasi

शिवपूजन-सामग्री

रोली	पान	घृत
मौली	सुपारी	शहद
धूपवत्ती	पेड़ा	चीनी
केशर	ऋतुफल	छोटी इलायची
कपूर	अतरकी शीशी	लवङ्ग
रूई	यज्ञोपवीत	पुष्पमाला
सिन्दूर	गोबर	फुटकर पुष्प
अवीर (गुलाल)	गोमूत्र	विल्वपत्र
बुक्का (अभ्रक)	दुग्ध	दूर्वा
चावल	दही	तुलसी

धतूरेके फूल और फल	अभिषेकपात्र	ब्राह्मणोंकी वरण-सामग्री
मदारका पुष्प	थाली (पूजनार्थ)	धोती
चन्दन	कटोरी ,,	अंगोछा
गङ्गाजल (अभिषेकार्थ)	पञ्चपात्र ,,	यज्ञोपवीत
कुशा	आचमनी ,,	कुशासन आदि
नारियल	लोटा ,,	ब्राह्मणोंके लिये मिष्टान्न
शिवजीके लिये धोती	रुद्राक्षमाला	ब्राह्मणोंके लिये दक्षिणा
शिवजीके लिये अंगोछा	मिट्टीके सकोरे	



पं० वेणीराम शर्मा गौड

भूमिका

'वेदः शिवः शिवो वेदः' के अनुसार वेद शिव हैं और शिव वेद हैं। अतः शिव वेदात्मक अथवा वेदस्वरूप हैं। इसीलिये वेदमन्त्रोंके द्वारा शिवजीका पूजन, अभिषेक, यज्ञ और जप आदि किया जाता है।

वेदोंमें शिवजीका वर्णन होनेके कारण शिव वैदिक देवता कहे जाते हैं। अतएव इनका रुद्राष्टाध्यायीसे रुद्राभिषेक किया जाता है।

भगवान् शिव यजुर्वेदमय हैं, अतः उनको शुक्लयजुर्वेद विशेष प्रिय है। इसीलिये शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायीसे शिवजीका रुद्राभिषेक अधिक प्रचलित है।

यजुर्मयो ह्ययं देवो यजुर्भिः शतरुद्रियैः।
पूजनीयो महारुद्रो सन्ततिश्रेय इच्छता ॥

'भगवान् शिव यजुर्वेदमय हैं, अतः अपनी सन्ततिकी कल्याण-कामनार्थ यजुर्वेदीय शतरुद्रियके अभिषेकके द्वारा महारुद्र पूजनीय हैं।'

रुद्राभिषेक दो प्रकारसे होता है। एक सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीसे और दूसरा शतरुद्रिय (१०० मन्त्र) से होता है। इन दोनोंमें सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायीके द्वारा 'रुद्राभिषेक' अधिक प्रचलित है।

शतरुद्रिय पाठके अन्तमें शान्त्यध्याय 'ॐ ऋचं वाचम्०' तथा स्वस्तिप्रार्थना-मन्त्राध्यायका भी पाठ करना चाहिये।

कुछ लोगोंका कहना है कि रुद्राभिषेकमें रुद्राष्टाध्यायीके 'लोमभ्य; स्वाहा०' (अध्याय ७।४–७) इत्यादि चार मन्त्रोंका पाठ नहीं करना चाहिये। जो लोग यह कहते हैं, उनका कथन शास्त्रविरुद्ध है। अतः द्राभिषेकमें रुद्राष्टाध्यायीके समस्त मन्त्रोंका पाठ करना चाहिये।

४ ४ ४ ३ ३ ३ २ १
वेदवेदाब्धिरामाश्च रामरामद्विकैककम् ।
२ २
द्वौ द्वौ पृथग्भिमन्त्रैस्तु नमकाश्चमकाः स्मृताः ॥
१ २ ३ ४ ५ ६ ७
वाजश्च सत्यमूर्क्चाश्माचाग्निरंशुष् तथाग्निकः ।
८ ९ १० ११
एका चैव चतस्रश्च त्र्यविर्वाजा इति क्रमः ॥

एवं चमकानेकादशधा विभज्य एकैकभागं नमकेषु संयोज्य पठेत् यत्स 'द्रः' । तैरेकादशरुद्रैः 'लघुरुद्रः' । तैरेकादशगुणैः 'महारुद्रः' । तैरेकादशावृत्तैः 'अतिरुद्रः' । एवं नमक-चमकरुद्राभिषेकप्रकारे 'नमस्ते' इत्यादि षट्षष्टि (६६) मन्त्रात्मको नमकाध्यायः पठनीयः ।

अर्थात् चमक अध्याय (रुद्रीके आठवें अध्याय) के ४, ४, ४, ३, ३, ३, २, १,

२ और २ मन्त्रोंके ११ भाग करके (जिनके प्रतीक ऊपरके श्लोकमें दिये हुए हैं) नमक अध्याय (रुद्रीके पाँचवें अध्याय) के प्रत्येक पाठके साथ (इन ११ भागोंसे क्रमशः) एक-एकको मिलाकर पाठ करनेसे 'रुद्र' होता है। ११ रुद्रोंसे 'लघुरुद्र', ११ लघुरुद्रोंसे 'महारुद्र' और ११ महारुद्रोंसे 'अतिरुद्र' होता है।

शतरुद्रिय पाठकी विधि

षट्षष्टि नीलसूक्तं च पुनः षोडशमेव च।
एष ते द्वे नमस्ते द्वे न तं विद्द्वयमेव च॥
मीढुष्टमेति चत्वारि वयर्ठ० चाष्टमेव च।

रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके ६६ समस्त मन्त्र, फिर उसी पञ्चम अध्यायके प्रारंभके १६ मन्त्र, रुद्राष्टाध्यायीके छठे अध्यायके 'एष ते०' और 'अवरुद्रमदीमह्यव०' ये दो मन्त्र, फिर रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्यायके प्रारम्भके 'नमस्ते०' और 'या ते०' ये दो मन्त्र, फिर शुक्ल यजुर्वेदसंहिताके १७ वें अध्यायके ३१ और ३२ 'न तं

विद्०' और 'विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट०' ये दो मन्त्र, फिर रुद्राष्टाध्यायीके पञ्चम अध्याय के ५१ वें मन्त्रसे ५४ (मीढुष्टम शिवतम० से असंख्याता सहस्राणि०) तकके मन्त्रोंसे और रुद्रीके सम्पूर्ण छठे अध्याय 'वयर्ठ० सोम०' के आठ मन्त्रोंके पाठ करनेसे 'शतरुद्रिय' पाठ कहा जाता है।

रुद्रीपाठका विविध फल

रुद्रीसंख्याफलं देवि शृणुष्व वदतो मम।
एकावृत्त्यादिपाठानां यथावत्कथयामि ते ॥ १ ॥
सङ्कल्पपूर्वं सम्पूज्य न्यासाङ्गेषु सकृत् सकृत्।
स्नात्वा पञ्चामृतेनैव ध्यानपूर्वं शिवं जपेत् ॥ २ ॥
बालग्रहोपशान्त्यर्थमेकावृत्तिमुदीरयेत्।
उपसर्गोपशान्त्यर्थं त्रिरावृत्तिं पठेन्नरः ॥ ३ ॥

ग्रहोपशान्त्यै कर्तव्या पञ्चावृत्तिर्वरानने ।
महाभये समुत्पन्ने सप्तावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ४ ॥

नवावृत्त्या भवेच्छान्तिर्वाजपेयफलं लभेत् ।
राजवश्ये विभूत्यै च रुद्रावृत्तिमुदीरयेत् ॥ ५ ॥

रुद्रैस्त्रिभिः कामसिद्धिर्वैरिहानिश्च जायते ।
शत्रुश्च पञ्चमी रुद्रैस्तथा स्त्री वश्यतामियात् ॥ ६ ॥

सौख्यं स्यात्सप्तमी रुद्रैः शिवमाप्नोति मानवः ।
नवरुद्रैः पुत्रपौत्रधनधान्यसुतान्वितः ॥ ७ ॥

राजभीतिविनाशाय वैरस्योच्चाटनाय च ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां साधनाय ततः परम् ॥ ८ ॥

अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्ययशःश्रिय ।
राजवृद्धिप्रदेयाय महारुद्रैकसंख्यया ॥ ९ ॥

त्रिभिश्चैव महारुद्रैरसाध्यासाधनाय च ।
पञ्चभिश्च महारुद्रैः राज्यकामः प्रसाध्यते ॥ १० ॥

सप्तभिश्च महारुद्रैः सप्तलोकः प्रसाध्यते ।
नवभिश्च महारुद्रैः पुनर्जन्म न जायते ॥ ११ ॥

अतिरुद्रैकसंख्येन देवत्वं प्राप्नुयान्नरः ।
डाकिन्यादिभये प्राप्ते एकावृत्तिं जपेन्नरः ॥ १२ ॥

भूतप्रेतपिशाचानां भये च गुणवृत्तितः ।
ग्रहदोषदशायाञ्च पञ्चावृत्तिं न संशयः ॥ १३ ॥

ज्वरातिसारदोषादौ वातपित्तकफादिषु ।
सर्वरोगोपशान्त्यर्थं सप्तावृत्तिर्न संशयः ॥ १४ ॥
सर्वार्थसाधनायैव नवावृत्तिं पठेन्नरः ।
असाध्यरोगनाशाय मनोऽभीप्सितकर्मणे ॥ १५ ॥
अल्पमृत्युविनाशाय तथारोग्याय वै पुनः ।
सर्वशान्तिर्भवेत्तत्र रुद्रावृत्त्या न संशयः ॥ १६ ॥

भगवान् शिवने पार्वतीसे रुद्रोके पाठका फल इस प्रकार कहा है--'शिवपूजक सर्वप्रथम संकल्प कर अङ्गन्यास करे। पश्चात् शिवको पञ्चामृतसे स्नान करावे और ध्यानपूर्वक जप करे। रुद्रीके एक पाठसे बालग्रहोंकी शान्ति, तीन पाठसे उपसर्ग (उपद्रव) की शान्ति, पाँच पाठसे ग्रहोंको शान्ति, सात पाठसे महाभयको शान्ति, नव पाठसे सर्वविध शान्ति और वाजपेय यज्ञकी फल-प्राप्ति, ग्यारह पाठसे राजाका वशीकरण और विविध विभूतियोंकी प्राप्ति होती है। तीन रुद्रोंसे कामनाकी सिद्धि और शत्रुओंका नाश, पाँच रुद्रोंसे शत्रु और स्त्रीका वशीकरण, सात रुद्रोंसे सुखप्राप्ति,

नव रुद्रोंसे पुत्र-पौत्र और धन-धान्यकी समृद्धि होती है। एक महारुद्रसे राजभयका नाश, शत्रुका उच्चाटन, धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी सिद्धि, अल्पमृत्युका विनाश, आरोग्य, यश और श्रीकी प्राप्ति तथा राजासे वृद्धि प्राप्त होती है। तीन महारुद्रोंसे असाध्य कार्यकी सिद्धि, पाँच महारुद्रोंसे राज्यकामनाकी सिद्धि, सात महारुद्रोंसे सप्तलोककी सिद्धि, नव महारुद्रोंसे पुनर्जन्मकी निवृत्ति होती है। एक अतिरुद्रसे देवत्वकी प्राप्ति, डाकिनी आदिसे भयकी निवृत्ति, तीन अतिरुद्रसे भूतादिकोंसे भयकी निवृत्ति, पाँच अतिरुद्रसे ग्रहदोषकी शान्ति, सात अतिरुद्रसे ज्वर, अतिसार, वात, पित्त, कफ आदि दोषोंकी शान्ति, नव अतिरुद्रसे सर्वार्थसिद्धि, अल्पमृत्युका विनाश और आरोग्यकी प्राप्ति होती है। ग्यारह अतिरुद्रसे समस्त प्रकारकी शान्ति होती है, इसमें कुछ भी संशय नहीं है।'

रुद्राभिषेकके लिये विविध द्रव्य और उनका विविध फल

लिख्यते च मया द्रव्यमभिषेकात्मकं परम्।
जलेन वृष्टिमाप्नोति व्याधिशान्त्यै कुशोदकैः ॥ १ ॥

दध्ना च पशुकामाय श्रिया इक्षुरसेन च ।
मध्वाज्येन धनार्थी स्यान्मुमुक्षुस्तीर्थवारिणा ॥ २ ॥

पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या वा मृतवत्सा च याऽङ्गना ॥ ३ ॥

सद्यः पुत्रमवाप्नोति पयसां चाभिषेचनात् ।
ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थं जलधारा शिवप्रिया ॥ ४ ॥

घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम् ।
तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः ॥ ५ ॥

प्रमेहरोगशान्त्यर्थं प्राप्नुयान्मानसेप्सितम् ।
केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः ॥ ६ ॥

शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत् ।
श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शङ्करस्य च ॥ ७ ॥
सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह ।
मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात् ॥ ८ ॥
पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा ।
जीवनार्थी तु पयसा श्रीकामीक्षुरसेन वै ॥ ९ ॥
पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसेनार्चेच्छिवं तथा ।
महालिङ्गाभिषेकेण सुप्रीतः शङ्करो मुदा ॥ १० ॥
कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम् ।

'मैं भगवान् शङ्करके अभिषेकात्मक श्रेष्ठ द्रव्योंको लिखता हूँ। जलसे वर्षा, कुशाके जलसे शान्ति, दहीसे पशु-प्राप्ति, ईखके रससे लक्ष्मी-प्राप्ति, मधु और घीसे धन,

११

तीर्थजलसे मोक्ष, दुग्धसे पुत्र-प्राप्ति अथवा वन्ध्या, काकवन्ध्या या मृतवत्सा स्त्रीको दुग्धसे शीघ्र पुत्र-प्राप्ति, जलकी धारासे ज्वर-शान्ति, एक हजार मन्त्रोंके सहित घृतकी धारासे वंश-विस्तार, केवल दुग्धकी धारासे प्रमेह रोगकी शान्ति और मनोवाञ्छाकी पूर्ति, शक्कर मिले हुए दुग्धसे जड़-बुद्धिका निर्मल होना, सरसोंके तेलसे शत्रुका नाश तथा रोगका नाश और शहदसे यक्ष्मारोगकी शान्ति तथा पापका क्षय होता है। पापक्षयकी इच्छावालेको मधुसे, आरोग्यकी इच्छावालेको घृतसे, दीर्घायुकी इच्छा-वालेको दुग्धसे, लक्ष्मीकी कामनावालेको ईख (गन्ने) के रससे और पुत्रार्थीको चीनी-से मिश्रित जलसे भगवान् सदाशिवजीका अभिषेक करना चाहिये। महालिङ्गका उपर्युक्त द्रव्योंसे अभिषेक करनेसे शिवजी अत्यन्त प्रसन्न होकर भक्तोंकी तत्तत् काम-नाओंको पूर्ण करते हैं। अतः भक्तोंको चाहिये कि वे यजुर्वेदविहित विधानसे रुद्रोंका अभिषेक करें।'

गवय-शृङ्गसे रुद्राभिषेकका महत्त्व

शिवजीके ऊपर गवय (नीलगाय) के सींगसे अभिषेक करनेका विशेष महत्त्व बतलाया गया है—

शिवं गवयशृङ्गेण केशवं शङ्खवारिणा ।
विघ्नेशं ताम्रपात्रेण स्वर्णेन जगदम्बिकाम् ॥

'गवयके सींगसे शिवका अभिषेक, शङ्खके जलसे केशवका अभिषेक, ताम्रके पात्रसे गणेशका अभिषेक और सुवर्णके पात्रसे जगदम्बाका अभिषेक प्रशस्त कहा गया है।'

औपासनं यदि कृतं हयमेधतुल्यं वासस्त्रिरात्रमिह गाङ्गतटे त्रिकल्पः ।
एकेन शृङ्गसलिलेन कृतोऽभिषेको मध्वाज्यदुग्धघटकोटिमितेन तुल्यः ॥

'गङ्गातट पर सामान्य उपासना भी अश्वमेध-यज्ञके तुल्य है और गङ्गातट पर तीन रात्रि निवास तीन कल्पवासके समान है। एक गवय-शृङ्गसे अभिषेक करोड़ों मधु, घृत और दुग्धके घड़ोंसे किये गये अभिषेकके समान है।'

शतरुद्रियके पाठका महत्त्व

यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आत्मपूतो भवति स सुरापानात्पूतो भवति स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति

स सुवर्णस्तेयात्पूतो भवति स कृत्याकृत्यात्पूतो भवति तस्मादविमुक्तिमाश्रितो भवत्वित्याश्रमी सर्वदा सकृद्वा जपेत् ।

अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम् ।
तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं पदमश्नुते ॥ (कैवल्योपनिषत्)

'जो शतरुद्रियका पाठ करता है वह अग्निमें तपाये हुए सुवर्णकी तरह पवित्र हो जाता है, वह वायुकी तरह पवित्र हो जाता है, वह पवित्रात्मा हो जाता है, वह सुरापानके पापसे मुक्त हो जाता है, वह ब्रह्महत्याके पापसे मुक्त हो जाता है, वह सुवर्णकी चोरीसे मुक्त हो जाता है, वह कृत्याकृत्यसे पवित्र हो जाता है और आश्रमत्यागी भी एक बार इसके पाठमात्रसे पवित्र हो जाता है । इस शतरुद्रियके पाठ करनेसे मनुष्य ज्ञान-प्राप्ति करता है और वह संसार-सागरसे तर जाता है । अतः शतरुद्रियका यथार्थ रूपसे ज्ञान-प्राप्त करनेपर कैवल्य-पदकी प्राप्ति होती है ।'

अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहीति । स होवाच याज्ञवल्क्यः शतरुद्रियेणेति ॥ (जाबालोपनिषत्)

ब्रह्मचारियोंने महर्षि याज्ञवल्क्यसे पूछा—'किस जपसे मोक्षकी प्राप्ति होती है'। याज्ञवल्क्यने कहा—'शतरुद्रिय-जपसे मोक्षकी प्राप्ति होती है।'

रहसि कृतानां महापातकानामपि शतरुद्रियं प्रायश्चित्तमिति। (शङ्खः)

महर्षि शङ्ख कहते हैं—'गुप्तरूपसे किये गये महापातकोंका भी प्रायश्चित्त शतरुद्रियका पाठ है।'

रुद्राध्यायीके पाठका महत्त्व

रुद्रैकादशिनीं जप्त्वा तदहैव विशुद्ध्यति। (याज्ञवल्क्यः)

'ग्यारह बार रुद्रजाप (रुद्राध्यायके पाठ) से उसी दिन मनुष्य शुद्ध हो जाता है।'

सुरापः स्वर्णहारी च रुद्रजापी जले स्थितः।
सहस्रशीर्षाजापी च मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥ (याज्ञवल्क्यः)

'मद्यपान करनेवाला और सुवर्णकी चोरी करनेवाला जो जलमें खड़ा होकर

रुद्राध्यायका जप (पाठ) करता है और 'सहस्रशीर्षा' इस अध्यायका पाठ करता है, वह समस्त पापोंसे मुक्त हो जाता है।'

स्तेयं कृत्वा गुरुदारांश्च गत्वा मद्यं पीत्वा ब्रह्महत्यां च धृत्वा ।
भस्मच्छन्नो भस्मशय्याशयानो रुद्राध्यायी मुच्यते सर्वपापैः ॥

(शातातपः)

'सुवर्णचोरी, गुरुपत्नीगमन, मद्यपान और ब्रह्महत्या करके जो अपने समस्त शरीरमें भस्म-लेपन करके भस्ममें शयन करनेवाला रुद्राध्यायके पाठमात्रसे समस्त पापोंसे मुक्त हो जाता है।'

इसी प्रकार रुद्राध्यायके पाठ करने का विशिष्ट महत्त्व उपनिषदों, स्मृतियों और पुराणोंमें भी लिखा है।

नमकं चमकं चैव पौरुषसूक्तं तथैव च ।
नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते ॥ १ ॥

नमकं चमकं हौतृं पुरुषसूक्तं जपेत्सदा ।
प्रविशेत् स महादेवं गृहं गृहपतिर्यथा ॥ २ ॥
भस्मदिग्धशरीरस्तु भस्मशायी जितेन्द्रियः ।
सततं रुद्रजाप्योऽसौ परां मुक्तिमवाप्स्यति ॥ ३ ॥
रोगवान् पापवांश्चैव रुद्रं जप्त्वा जितेन्द्रियः ।
रोगात्पापाद्विनिर्मुक्तो ह्यतुलं सुखमश्नुते ॥ ४ ॥
(वायुपुराण)

'रुद्राष्टाध्यायीके नमक और चमक तथा पुरुषसूक्तका प्रतिदिन तीन बार जप (पाठ) करनेसे मनुष्य ब्रह्मलोकको प्राप्त करता है । जो नमक, चमक और पुरुष-सूक्तका सर्वदा जप करता है, वह उसी प्रकार महादेवजीमें प्रवेश करता है, जिस प्रकार घरका स्वामी अपने घरमें प्रवेश करता है । जो मनुष्य अपने शरीरमें भस्म

लगाकर, भस्ममें शयन कर और जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्राध्यायका पाठ करता है, वह मुक्त हो जाता है। जो रोगी और पापी जितेन्द्रिय होकर रुद्राध्यायका पाठ करता है, वह रोग और पापसे मुक्त होकर महान् सुखको प्राप्त करता है।'

यश्च रुद्राञ्जपेन्नित्यं ध्यायमानो महेश्वरम्।
यश्च सागरपर्यन्तां सशैलवनकाननाम्॥ १॥
सर्वान्नात्मगुणोपेतां सुवृक्षजलशोभिताम्।
दद्यात् काञ्चनसंयुक्तां भूमिं चौषधिसंयुताम्॥
तस्मादप्यधिकं तस्य सकृद्रुद्रजपाद् भवेत्॥ २॥
मम भावं समुत्सृज्य यस्तु रुद्राञ्जपेत्सदा।
स तेनैव च देहेन रुद्रः सञ्जायते ध्रुवम्॥ ३॥

'जो महेश्वरका प्रतिदिन ध्यान करता हुआ प्रतिदिन रुद्राध्यायका एक बार पाठ (जप) करता है, उसको शैलवन—कानन के सहित, समस्त श्रेष्ठ गुणोंसे सहित, श्रेष्ठ वृक्ष और जलोंसे शोभित, सुवर्ण तथा औषधके सहित समुद्रपर्यन्त पृथिवीको दान करनेसे भी अधिक फल प्राप्त होता है। अर्थात् रुद्राध्यायके जप (पाठ) का फल समस्त प्रकारके दानोंसे भी अधिक है। जो ममताका त्यागकर सर्वदा रुद्राध्याय-का पाठ (जप) करता है, वह उसी शरीरसे निश्चय ही रुद्र हो जाता है।'

इस रुद्राष्टाध्यायीमें रुद्राभिषेककर्ताओंके लाभार्थ रुद्राभिषेकके नमक-चमकके पाठका क्रम, शतरुद्रियपाठकी विधि, रुद्रीपाठका विविध फल, रुद्राभिषेकके लिये विविध द्रव्य और उनका विविध फल, गवय-शृङ्गसे रुद्राभिषेकका महत्त्व, शतरुद्रियके पाठका महत्त्व और रुद्राध्यायोके पाठका महत्त्व आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषय हिन्दीके सहित दिये गये हैं। साथ ही शिवपूजनविधि भी विस्तृत और परिष्कृत रूपसे दी गई है, जिससे शिवपूजनकर्त्ता सविधि शिवपूजन कर सकते हैं।

१९

आशा है, यह रुद्राष्टाध्यायी द्विजमात्रके लिये अत्यन्त उपयोगी होगी ।

मैं चौखम्भा ओरियन्टालियाके अध्यक्ष महोदयको विशेष धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने वेदाध्ययनकर्ताओंके कल्याणार्थ रुद्राष्टाध्यायीको प्रकाशित किया है ।

वाराणसी
कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा
संवत् २०३६

वेणीराम गौड वेदाचार्य

शिवपूजनविधिः

शिवपूजनकर्ता स्नान-सन्ध्योपासनादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर पवित्र स्थान में पूजन-सामग्री को अपने सम्मुख रख के कुशा आदि के पवित्र आसन पर बैठें। पश्चात् ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। इस प्रकार आचमन करके फिर तीन बार प्राणायाम करें। अनन्तर इस प्रकार विनियोग करें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिर्विष्णुर्देवता गायत्री छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ कर पूजन-सामग्री के ऊपर और अपने ऊपर जल छिड़कें—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

पश्चात् इस प्रकार विनियोग करें—

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण कर आसन पर जल छिड़कें—

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

पश्चात् अपने शरीर की शुद्धि के लिये सर्वप्रायश्चित्त करें। सर्वप्रायश्चित्त का सङ्कल्प इस प्रकार है—

'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम्, अमुकगुप्तोऽहम्) करिष्यमाणरुद्राभिषेककर्मणि अधिकारप्राप्त्यर्थं कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापशमनार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं च गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये' इस प्रकार सङ्कल्प कर तण्डुलों से परिपूर्ण ताम्र के पात्र में कुंकुम से अष्टदल पद्म का निर्माण कर उसके ऊपर गोमयमयी गौरी और फलमय गणेश को...

स्थापित करें अपने हाथ में अक्षत एवं पुष्प लेकर

भद्राः०' इत्यादि मङ्गलमन्त्रों को पढ़ें। अनन्तर हाथ में जल और अक्षत लेकर संकल्प करें।

सङ्कल्पः—'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितोयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते अमुकक्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे षष्ठ्यब्दानां मध्ये अमुकसंवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्मा (अमुकवर्मा, अमुकगुप्तः) सपत्नीकोऽहं ममाऽऽत्मनः कायिक-वाचिक-मानसिक-सांसर्गिक-चतुर्विधपापक्षयपूर्वकं आध्यात्मिक-आधिदैविक-आधिभौतिक-त्रिविधतापनिवृत्त्यर्थम्, आयुरारोग्यैश्वर्यादि-

वृद्ध्यर्थम्, श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं च धर्मार्थकाममोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थ-सिद्धिद्वारा श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये नार्मदशिवलिङ्गोपरि (अमुकलिङ्गोपरि) यथोपचारैः शिवपूजनपूर्वकं दुग्धधारया जलधारया वा एकादशब्राह्मणद्वारा (अमुकसंख्याकब्राह्मणद्वारा) सकृद्रुद्रावर्तनेन रुद्रैकादशिन्या वा महारुद्रेण अभिषेकाख्यं कर्म करिष्ये । (तदङ्गत्वेन नन्दीश्वरादिपूजनं च करिष्ये)। तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये ।'

इस प्रकार संकल्प करने के बाद षडङ्गन्यास करें ।

षडङ्गन्यासः—मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिर्ऋषिः बृहती छन्दः बृहस्पतिर्देवता हृदयन्यासे विनियोगः ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽइह मा दयन्तामों३ प्रतिष्ठ ॥

अवोद्‌ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिरोन्यासे विनियोगः ।

ॐ अबोद्‌ध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवा यतीमुषासम् । यह्वा ऽइव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप् छन्दः शिखान्यासे विनियोगः ।

ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या व्वैश्वानरमृत ऽआजातमग्निम् । कविठं॰ सम्म्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः ॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

मर्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्माणि देवता विराट् छन्दः कवचन्यासे विनियोगः ।

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप् छन्दः नेत्रन्यासे विनियोगः।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्पात्। सं बाहुब्भ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः ॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एको रुद्रो देवता जगती छन्दः अस्त्रन्यासे विनियोगः।

ॐ मा न स्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो

ऽअश्श्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

देवतान्यासः—ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥

गणपतिपूजनम्—ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

इस प्रकार षोडशोपचार अथवा यथोपचार से गणेशजी का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रात-पतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥

अम्बिकापूजनम्—ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

इस प्रकार यथोपचार से अम्बिका का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम् ॥

नन्दीश्वरपूजनम्—ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घना-घनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोऽनिमिष ऽएकवीरः शतꣳ सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥

इस प्रकार यथोपचार से नन्दीश्वर का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ प्रैतु व्वाजी कनिक्कदन्नानदद्रासभः पत्त्वा ।
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा ॥

वीरभद्रपूजनम्—ॐ भद्द्रं कर्ण्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

इस प्रकार यथोपचार से वीरभद्र का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ भद्द्रो नो ऽअग्निराहुतो भद्द्रा रातिः सुभग भद्द्रो ऽअध्वरः । भद्द्रा ऽउत प्रशस्तयः ॥

स्वामिकार्तिकपूजनम्—ॐ यदक्क्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्द्रादुत वा पुरीषात् । श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन् ॥

इस प्रकार यथोपचार से स्वामिकार्तिक का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा व्विशिखा ऽइव । तन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु व्विश्वाहा शर्म्म यच्छतु ॥

कुबेरपूजनम्—ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं व्वियूय । इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽउक्तिं यजन्ति ॥

इस प्रकार यथोपचार से कुबेर का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ व्वयर्ठ० सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः । प्रजावन्तः सचेमहि ॥

कीर्तिमुखपूजनम्—ॐ असवे स्वाहा व्वसवे स्वाहा व्विभुवे स्वाहा व्विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा सर्ठ० सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतये स्वाहा ॥

इस प्रकार यथोपचार से कीर्तिमुख का पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करें—

ॐ ओजश्च मे सहश्च म ऽआत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च म ऽआयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

शिवकी जलहरी में यदि सर्प का आकार बना हो तो प्रथम सर्प का पूजन करके पश्चात् शिव का पूजन करें।

सर्प का पूजन निम्नलिखित मन्त्र से करें—

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥

पश्चात् शिव का पूजन इस प्रकार श्रद्धा-भक्ति से करें—

ध्यान—ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।

पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः साम्बशिवं ध्यायामि ।

आवाहन—ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ।
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

त्रिपुरान्तकरं देवं चूडाचन्द्रमहाद्युतिम् । गजचर्मपरीधानं शिवमावाहयाम्यहम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः । आवाहनं समर्पयामि । आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि ।

आसन—ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥

विश्वेश्वर महादेव महेशान परात्पर । मया समर्पितं रम्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

समर्पयामि ।

प्राणप्रतिष्ठा—ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञठं॰ समिमं दधातु । विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामोंऽ प्रतिष्ठ ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च ।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः प्राणप्रतिष्ठापयामि । ततः पादयोः पाद्यं समर्पयामि । हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि । अर्घ्याङ्गमाचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पाद्य—ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंठं॰ सीः पुरुषं जगत् ॥

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् । पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्य—ॐ शिवेन व्वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ।

यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽअसत् ॥

नमस्ते देव देवेश नमस्ते करुणाम्बुधे । करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमन—ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ।

अहींश्च सर्वा जम्भयन्त्सर्वाश्च यातु धान्यो धराचीः परासुव ॥

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम् । आचम्यतां मया दत्तं गृहीत्वा परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

मधुपर्क—ॐ यन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम् । तेनाहं

मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽसानि ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि ।

स्नान—ॐ असौ यस्ताम्रो ऽअरुण ऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः । ये चैनर्ठ० रुद्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाᳪ हेड ऽईमहे ॥

गङ्गा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी-नर्मदाजलैः । स्नापितोऽसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि ।

पयःस्नान—ॐ पयः पृथिव्यां पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि । पयःस्नानान्ते शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि ।

दधिस्नान—ॐ दधिक्राव्णो ऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः । सुरभि नो मुखा करत् प्रण ऽआयूꣳषि तारिषत् ॥

पयसस्तु समुद्भुतं मधुराम्लं शशिप्रभम् । दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि ।

घृतस्नान—ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम । अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभ व्वक्षि हव्यम् ॥

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाविवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदक-स्नानं समर्पयामि ।

मधुस्नान—ॐ मधुव्वाता ऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माद्-

[illegible]

द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२ऽ अस्तु सूर्य्यः । माद्ध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः ॥

दिव्यैः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुणसमन्वितम् । मधुरं मधुनामाढ्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

शर्करास्नान—ॐ अपा ँ रसमुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम् । अपा ँ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्रायत्वा जुष्टतमम् ॥

इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शर्करास्नानं समर्पयामि । शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतस्नान—ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित् ॥

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु । शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि ।

शुद्धोदकस्नान—ॐ शुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः । श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः ॥

गङ्गा गोदावरी रेवा पयोष्णी यमुना तथा । सरस्वती तीर्थजातं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

महाभिषेकस्नान—पश्चात् शिव की मूर्ति पर ॐ नमस्ते० (१–६६) इस रुद्रसूक्त से जलधारा द्वारा अभिषेक करें ।

गन्धादकस्नान—ॐ त्वा गन्धर्व्वा ऽअखनस्त्वामिन्द्रस्त्वा बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत ॥

मलयाचलसम्भूतं चन्दनागुरुसम्भवम् । चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उद्वर्तनस्नान—ॐ अठं॰ शुना ते अठं॰ शुः पृच्च्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोम भवतु मदाय रसो ऽअच्च्युतः ॥

नानासुगन्धिद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् । उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उद्वर्तनस्नानं समर्पयामि । उद्वर्तनस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

विजयास्नान—ॐ व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ२ ऽउत । अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥

शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्यभावसमन्वितम् ।
विजयाख्यं च स्नानार्थं भक्त्या दत्तं प्रगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयां समर्पयामि । विजयासमर्पणान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

वस्त्र—ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो विलोहितः । उतैनं गोपा ऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ॥

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् । देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ।

**यज्ञोपवीत—ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।
अथो ये ऽअस्य सत्वानो ऽहन्तेभ्योऽकरं नमः ॥**

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

उपवस्त्र—ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथ मा सदत्स्वः । व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो ॥

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ।

गन्ध (चन्दन)—ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् । याश्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप ॥

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् । विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धं समर्पयामि ।

भस्म—ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने । सꣳ सृज्ज्य-मातृभिष्ट्वं ज्ज्योतिष्मान् पुनरासदः ॥

सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योतिस्समप्रभम् । सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्म समर्पयामि ।

अक्षत--ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत ।

अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्रते हरी ॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः । मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि ।

पुष्पमाला--ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।

मयाऽऽनीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पमालां समर्पयामि ।

बिल्वपत्र—ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च ॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुतम्। त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१॥
काशीवासनिवासी च कालभैरवदर्शनम् । कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम् । अघोरपापसंकाशं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥
अखण्डैर्बिल्वपत्रैश्च पूजयेच्छिवशङ्करम् । कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥
गृहाण बिल्वपत्राणि सपुष्पाणि महेश्वरः । सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुमप्रियः ॥५॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः । तव पुजां करिष्यामि गृहाण परमेश्वर ॥६॥
श्रीवृक्षामृतसम्भूतं शङ्करस्य सदा प्रियम् । पवित्रं ते प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वरम् ॥७॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च कोमलैश्चातिसुन्दरैः । त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नो भव सर्वदा ॥८॥
अमृतोद्भवश्रीवृक्षं शङ्करस्य सदा प्रियम् । तत्ते शम्भो प्रयच्छामि बिल्वपत्रं सुरेश्वर ॥९॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश बिल्वपत्राणि समर्पयामि ।

दूर्वाङ्कुर—ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्पारि ।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान् । आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ।

शमीपत्र—ॐ अग्नेस्तनूरसि व्वाचो व्विसर्ज्जनं देववीतये त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावासि व्वानस्पत्यः स ऽइदं देवेभ्यो हविः शमीष्व सुशमि शमीष्व । हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि ॥

अमङ्गलानां च शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च ।
दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम् ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शमीपत्राणि समर्पयामि ।

तुलसी-मञ्जरी—ॐ शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः। मा द्यावापृथिवी ऽअभिशोचीर्म्मान्तरिक्षं मा व्वनस्पतीन् ॥

मिलत्परिमलामोदभृङ्गसङ्गीतसंस्तुताम्। तुलसीमञ्जरीं मञ्जु अञ्जसा स्त्रीकुरु प्रभो ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः तुलसीमंजरी समर्पयामि।

आभूषण—ॐ युवं तमिन्द्रापर्व्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तन्तमिद्धतं व्वज्रेण तन्तमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत् ॥

वज्र-माणिक्य-वैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम्। पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः आभूषणं समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्य—ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्वा व्वयुनानि व्विद्वान् पुमान् पुमाꣳ सं परिपातु व्विश्वतः ॥

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम् । नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि ।

सिन्दूर—ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः । घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः ॥

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यसुखवर्द्धनम् । शुभदं चैव माङ्गल्यं सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि ।

सुगन्धिद्रव्य—ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम् । गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरु शङ्कर ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि ।

अङ्गपूजा—गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से भगवान् शिव की इस प्रकार अङ्गपूजा करें—

ॐ ईशानाय नमः पादौ पूजयामि ॥ १ ॥
ॐ शङ्कराय नमः जङ्घे पूजयामि ॥ २ ॥
ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥ ३ ॥
ॐ शम्भवे नमः कटी पूजयामि ॥ ४ ॥
ॐ स्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि ॥ ५ ॥
ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥ ६ ॥
ॐ विश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि ॥ ७ ॥
ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥ ८ ॥

ॐ स्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि ॥ ९ ॥

४७

ॐ नीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥ १० ॥

ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ॥ ११ ॥

ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि ॥ १२ ॥

ॐ नागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥ १३ ॥

ॐ देवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि ॥ १४ ॥

आवरणपूजा——ॐ अघोराय नमः ॥१॥ ॐ पशुपतये नमः ॥२॥ ॐ शिवाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ विरूपाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ विश्वरूपाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ भैरवाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ८ ॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥ ९ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ १० ॥ ॐ महेशाय नमः ॥ ११ ॥

एकादशशक्तिपूजा——ॐ उमायै नमः ॥१॥ ॐ शङ्करप्रियायै नमः

४८

॥२॥ ॐ पार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्यै नमः ॥४॥ ॐ काल्यै नमः ॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः ॥६॥ ॐ कोटर्यै नमः ॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः ॥९॥ ॐ ह्रां नमः ॥९॥ ॐ ह्रीं नमः ॥१०॥ ॐ गङ्गादेव्यै नमः ॥११॥

गणपूजा—ॐ गणपतये नमः ॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः ॥२॥ ॐ पुष्पदन्ताय नमः ॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥४॥ ॐ भैरवाय नमः ॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥६॥ ॐ ईश्वराय नमः ॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः ॥८॥ ॐ नन्दिने नमः ॥९॥ ॐ महाकालाय नमः ॥१०॥

अष्टमूर्तिपूजा—ॐ भवाय क्षितिमूर्तये नमः ॥ १ ॥ ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः ॥२॥ ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः ॥३॥ ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः ॥४॥ ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः ॥५॥ ॐ पशुपतये

यजमानमूर्तये नमः ॥ ६ ॥ ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः ॥८॥

एकादश रुद्रपूजा—ॐ अघोराय नमः ॥ १ ॥ ॐ पशुपतये नमः ॥ २ ॥ ॐ शर्वाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ विश्वरूपिणे नमः ॥ ५ ॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ७ ॥ ॐ भैरवाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥ ९ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ १० ॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥ ११ ॥

अष्टोत्तरशतशिवनाम-पूजा—(शिव के १०८ नामों से पुष्प, अक्षत आदि से शिव-पूजन करें)—

ॐ अस्य श्रीशिवाष्टोत्तरशतनाममन्त्रस्य नारायणऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीसदाशिवो देवता गौरी उमाशक्तिः श्रीसाम्बसदाशिवप्रीतये अष्टोत्तरशतनामभिः शिवपूजने विनियोगः ।

शान्ताकारं शिखरिशयनं नीलकण्ठं सुरेशं

गौरीकान्तं त्रितयनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे शम्भुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ शिवाय नमः ॥ १ ॥ ॐ महेश्वराय नमः ॥ २ ॥ ॐ शम्भवे नमः ॥ ३ ॥ ॐ पिनाकिने नमः ॥ ४ ॥ ॐ शशिशेखराय नमः ॥५॥ ॐ वामदेवाय नमः ॥ ६ ॥ ॐ विरूपाक्षाय नमः ॥ ७ ॥ ॐ कपर्दिने नमः ॥ ८ ॥ ॐ नीललोहिताय नमः ॥९॥ ॐ शङ्कराय नमः ॥१०॥ ॐ शूलपाणये नमः ॥ ११ ॥ ॐ खट्वाङ्गिने नमः ॥१२॥ ॐ विष्णुवल्लभाय नमः ॥ १३ ॥ ॐ शिपिविष्टाय नमः ॥ १४ ॥ ॐ अम्बिकानाथाय नमः ॥ १५ ॥ ॐ श्रीकण्ठाय नमः ॥ १६ ॥ ॐ भक्तवत्सलाय नमः ॥ १७ ॥ ॐ भवाय नमः ॥ १८ ॥ ॐ शर्वाय नमः ॥ १९ ॥ ॐ त्रिलोकीशाय नमः ॥ २० ॥ ॐ शितिकण्ठाय नमः ॥२१॥ ॐ शिवाप्रियाय नमः ॥ २२ ॥ ॐ उग्राय नमः ॥२३॥ ॐ कपालिने नमः ॥ २४ ॥ ॐ कामारये नमः ॥ २५ ॥ ॐ अन्धकासुरसूदनाय नमः ॥ २६ ॥ ॐ गङ्गाधराय नमः ॥ २७ ॥ ॐ ललाटाक्षाय नमः ॥ २८ ॥ ॐ कालकालाय नमः ॥ २९ ॥ ॐ कृपानिधये नमः ॥ ३० ॥ ॐ भीमाय नमः ॥ ३१ ॥

५१

ॐ परशुहस्ताय नमः ॥३२॥ ॐ मृगपाणये नमः ॥३३॥ ॐ जटाधराय नमः ॥३४॥
ॐ कैलासवासिने नमः ॥३५॥ ॐ कवचिने नमः ॥३६॥ ॐ कठोराय नमः ॥ ३७ ॥
ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः ॥ ३८ ॥ ॐ वृषाङ्काय नमः ॥ ३९ ॥ ॐ वृषभारूढाय नमः
॥ ४० ॥ ॐ भस्मोद्धूलितविग्रहाय नमः ॥ ४१ ॥ ॐ सामप्रियाय नमः ॥ ४२ ॥
ॐ स्वरमयाय नमः ॥४३॥ ॐ त्रिमूर्त्तये नमः ॥४४॥ ॐ अश्विनीश्वराय नमः ॥४५॥
ॐ सर्वज्ञाय नमः ॥ ४६ ॥ ॐ परमात्मने नमः ॥४७॥ ॐ सोमसूर्य्याग्निलोचनाय
नमः ॥ ४८ ॥ ॐ हविषे नमः ॥ ४९ ॥ ॐ यज्ञमयाय नमः ॥ ५० ॥ ॐ पञ्चवक्त्राय
नमः ॥ ५१ ॥ ॐ सदाशिवाय नमः ॥ ५२ ॥ ॐ विश्वेश्वराय नमः ॥ ५३ ॥ ॐ
वीरभद्राय नमः ॥ ५४ ॥ ॐ गणनाथाय नमः ॥ ५५ ॥ ॐ प्रजापतये नमः ॥ ५६ ॥
ॐ हिरण्यरेतसे नमः ॥ ५७ ॥ ॐ दुर्द्धर्षाय नमः ॥ ५८ ॥ ॐ गिरीशाय नमः ॥ ५९ ॥
ॐ गिरिशाय नमः ॥६०॥ ॐ अनघाय नमः ॥६१॥ ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः ॥६२॥
ॐ भर्गाय नमः ॥६३॥ ॐ गिरिधन्वने नमः ॥ ६४ ॥ ॐ गिरिप्रियाय नमः ॥६५॥
ॐ अष्टमूर्त्तये नमः ॥६६॥ ॐ अनेकात्मने नमः ॥६७॥ ॐ सात्त्विकाय नमः ॥६८॥

ॐ शुभविग्रहाय नमः ॥६९॥ ॐ शाश्वताय नमः ॥७०॥ ॐ खण्डपरशवे नमः ॥७१॥
ॐ अजाय नमः ॥७२॥ ॐ पाशविमोचकाय नमः ॥७३॥ ॐ कृत्तिवाससे नमः ॥७४॥
ॐ पुरारातये नमः ॥ ७५ ॥ ॐ भगवते नमः ॥७६॥ ॐ प्रथमाधिपाय नमः ॥७७॥
ॐ मृत्युञ्जयाय नमः ॥ ७८ ॥ ॐ सूक्ष्मतनवे नमः ॥ ७९ ॥ ॐ जगद्व्यापिने नमः
॥८०॥ ॐ जगद्गुरवे नमः ॥८१॥ ॐ व्योमकेशाय नमः ॥८२॥ ॐ महासेनाय नमः
॥ ८३ ॥ ॐ जनकाय नमः ॥ ८४ ॥ ॐ चारुविक्रमाय नमः ॥ ८५ ॥ ॐ रुद्राय नमः
॥८६॥ ॐ भूतपतये नमः ॥ ८७ ॥ ॐ स्थाणवे नमः ॥ ८८ ॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय
नमः ॥८९॥ ॐ दिगम्बराय नमः ९० ॥ ॐ मृडाय नमः ॥९१॥ ॐ पशुपतये नमः
॥९२॥ ॐ देवाय नमः ॥९३॥ ॐ महादेवाय नमः ॥९४॥ ॐ अव्ययाय नमः ॥९५॥
ॐ हरये नमः ॥ ९६ ॥ ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः ॥ ९७ ॥ ॐ भगनेत्रभिदे नमः ॥९८॥
ॐ अपवर्गप्रदाय नमः ॥ ९९ ॥ ॐ अव्यग्राय नमः ॥ १०० ॥ ॐ अव्यक्ताय नमः
॥ १०१ ॥ ॐ अनन्ताय नमः ॥ १०२ ॥ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः ॥ १०३ ॥

५३

ॐ सहस्राक्षाय नमः ॥१०४॥ ॐ तारकाय नमः ॥ १०५ ॥ ॐ हराय नमः ॥१०६॥
ॐ सहस्रपदे नमः ॥ १०७ ॥ ॐ श्रीपरमेश्वराय नमः ॥ १०८ ॥

पञ्चवक्त्रपूजा

ॐ प्रालेयामलबिन्दुकुन्दधवलं गोक्षीरफेनप्रभं
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहनज्वालावलीलोचनम् ।
ब्रह्मेन्द्राग्निमरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभि-
र्वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम् ॥

ॐ पश्चिमवक्त्राय नमः ॥ १ ॥

ॐ गौरं कुङ्कुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगण्डस्थलं
भ्रूविक्षेपकटाक्षवीक्षणलसत्संसक्तकर्णोत्पलम् ।

५४

स्निग्ध बिम्बफलाधर प्रहसितं नीलालकालङ्कृतं

वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम् ॥

ॐ उत्तरवक्त्राय नमः ॥ २ ॥

ॐ कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यादीप्तपिङ्गेक्षणं

खण्डेन्दुद्युतिमिश्रितोग्रदशनप्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्कुरम् ।

सर्पप्रोतकपालशुक्तिसकलं व्याकीर्णसच्छेखरं

वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य जटिलं भ्रूभङ्गरौद्रं मुखम् ॥

ॐ दक्षिणवक्त्राय नमः ॥ ३ ॥

ॐ संवर्त्ताभितडित्प्रतप्तकनकप्रस्पर्धितेजोमयं

गम्भीरस्मितनिःसृतोग्रदशनं प्रोद्भासिताम्राधरम् ।

बालेन्दुद्युतिलोलपिङ्गलजटाभारप्रबद्धोरगं
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः ॥

ॐ पूर्ववक्त्राय नमः ॥ ४ ॥

ॐ व्यक्ताऽव्यक्तगुणोत्तरं सुवदनं षड्विंशतत्त्वाधिकं
तस्मादुत्तरतत्त्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः ।
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परं
शान्तं पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापितेजोमयम् ॥

ॐ ऊर्ध्ववक्त्राय नमः ॥ ५ ॥

धूप—ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।

५६

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि ।

दीप—ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः ।
अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम् ॥

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने ।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्दीपज्ज्योतिर्नमोऽस्तु ते ॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि । हस्तप्रक्षालनम् ।

नैवेद्य—ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव ॥

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम् ॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च ।
आहारो भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि । नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि ।

पश्चात् नैवेद्यको पवित्र जलसे अभ्युक्षण करके गन्ध और पुष्पसे आच्छादित कर दें । अनन्तर धेनुमुद्रासे अमृतीकरण करके योनिमुद्रा दिखावें और घण्टा बजा दें । पश्चात् ग्रासमुद्राको दिखाकर चन्दन का अनुलेपन करें ।

करोद्वर्तनार्थं चन्दन—ॐ अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः । गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः ॥

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि ।

ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा ।

—इत्यादिके द्वारा मुद्राओंका प्रदर्शन करें और बीच-बीचमें आचमनीय जलको समर्पित करें । उत्तरापोशनार्थं पुनः नैवेद्य निवेदन करें । हस्तप्रक्षालनार्थं और मुखप्रक्षालनार्थं जल समर्पित करें । पुनः आचमनीय जलको समर्पित करें ।

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि ।

ऋतुफल—ॐ याः फलिनीर्या॑ऽ अफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वꣳ हसः ॥

नानाविधानि दिव्यानि मधुराणि फलानि वै ।
भक्त्यार्पितानि सर्वाणि गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः ऋतुफलानि समर्पयामि ।

[1]धत्तूरफल—ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽउन्नयामि ।
समापो ऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥

धीरधैर्यपरीक्षार्थं धारितं परमेष्ठिना । धत्तूरं कण्टकाकीर्णं गृहाण परमेश्वर ॥
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः धत्तूरफलं समर्पयामि ।

ताम्बूल (सुपारी, इलायची और लवंगसहित)—

ॐ नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने ॥

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् । एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।
श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः [2]मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि ।

---

१. धत्तूरकैश्च यो लिङ्गं सकृत्पूजयते नरः । स गोलक्षफलं प्राप्य शिवलोके महीयते ॥ (भविष्यपुराण)
२. श्वेतपत्रं च चूर्णं च क्रमुकाणां फलानि च । नारिकेलफलोपेतं मातुलुङ्गसमायुतम् ॥
एला-लवङ्ग-कङ्कोलैर्मुखवासं प्रचक्षते ॥

दक्षिणा द्रव्य—ॐ मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं मा न ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम् । मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र द्रीरिषः ।

दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता । अनन्तफलदामेनां गृहाण परमेश्वर ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि ।

आरार्त्ति—ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ ।
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम् ॥१॥

ॐ इदर्ठ० हविः प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीरर्ठ० सर्व्वगणर्ठ० स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्मासु धत्त ॥ २ ॥

ॐ आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः ।
दिवः सदाᳬंसि बृहती व्वि तिष्ठस ऽआ त्त्वेषं व्वर्त्तते तमः ॥३॥

ॐ अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्द्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥ ४ ॥

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

ॐ जय शिव ओंकारा, जय शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा ॥ १ ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजै ।
हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहै ॥ ३ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

अक्षमाला बनमाला रुण्डमाला धारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ॥ ४ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे ।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक सङ्गे ॥ ५ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र त्रिशूल धरता ।
जगकर्त्ता जगभर्त्ता जगपालनकर्त्ता ॥ ६ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षरमें शोभित ये तीनों एका ॥ ७ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

काशीमें विश्वनाथ विराजैं नन्दी ब्रह्मचारी ।
नित उठ दर्शन पावैं महिमा अति भारी ॥ ८ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

त्रिगुण स्वामिकी आरति जो कोई नर गावै ।
भनत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावै ॥ ९ ॥
ॐ हर हर हर महादेव ॥

जय शिव ओंकारा, हो मन भज शिव ओंकारा,
हो मन रट शिव ओंकारा, हो शिव गल रुण्डमाला,
हो शिव ओढ़त मृगछाला, हो शिव पीते भंग-प्याला,
हो शिव रहते मतवाला, हो शिव पार्वतीप्यारा,
हो शिव ऊपर जलधारा ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धङ्गी धारा ॥ १० ॥

ॐ हर हर हर महादेव ॥

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः । मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्ह-विष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

(शु० य० ३१।१६)

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

(तैत्तिरीयारण्यक १।३१)

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति ॥

(ऐतरेयब्राह्मण ८।४।१५)

तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः समासद इति ॥

(ऐतरेयब्राह्मण ८।४।२१)

६६

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतो मुखो व्विश्वतो बाहुरुत व्विश्व-तस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव ऽएकः ॥

(शु० य० १७।१९)

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

शिवगायत्री—ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

मन्दारमालाङ्कुलितालकायै कपालमालाङ्कितशेखराय ।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः शिवगायत्रीं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा—ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि ॥

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽअबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च । तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदक्षिणपदे पदे ॥

श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

प्रणाम—ॐ नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्य-शशाङ्क-वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयञ्च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ॥ १ ॥

वन्दे महेशं सुरसिद्धसेवितं भक्तैः सदा पूजितपादपद्मम् ।
ब्रह्मेन्द्रविष्णुप्रमुखैश्च वन्दितं ध्यायेत्सदा कामदुघं प्रसन्नम् ॥ ॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टां डमरुसहितं साङ्कुशं वामभागे
नानालङ्कारयुक्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥ ३ ॥

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैकमखिलं
तथापि स्मर्तॄणां वरद परमं मङ्गलमसि ॥ ४ ॥

त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः ॥ ५ ॥
गङ्गाधर नमस्तुभ्यं वृषध्वज नमोऽस्तु ते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो भूयो नमो नमः ॥ ६ ॥

क्षमा-प्रार्थना

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ १ ॥

आवाहनं न जानामि न जानामि तवार्चनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥

पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पापसम्भवः ।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपापहरो भव ॥ ३ ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ ४ ॥

७०

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥ ५ ॥

पश्चात् निम्नाङ्कित वाक्य कह कर यह पूजन-कर्म भगवान्‌को समर्पित करें ।

'अनेन यथाशक्तिकृतेन पूजनेन श्रीसाम्बसदाशिवः प्रीयतां॰न मम' ।

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

इति शिवपूजनविधिः ।

अथ रुद्राभिषेकादिविधिः ।

ब्राह्मणवरण—शिवपूजन करनेके बाद शिवपूजनकर्ता ब्राह्मणोंका वरण करें। वरणके लिये शिवपूजक सर्वप्रथम ब्राह्मणोंका पाद-प्रक्षालन करें। पश्चात् ब्राह्मणोंके मस्तकमें तिलक लगावें, फिर चावल लगावें। पश्चात् उनको पुष्पमाला पहनावें। अनन्तर अपने दाहिने हाथमें वरणकी सामग्री अथवा वरण-सामग्रीके निमित्त द्रव्य लेकर इस प्रकार संकल्प करें—

'अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (अमुकवर्माऽहम् , अमुकगुप्तोऽहम्) सङ्कल्पिते रुद्राभिषेककर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः पाठकरणार्थममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे' अथवा—'अमुकामुकगोत्रान्नानाशर्मब्राह्मणान् युष्मान् वृणे'।

एक ब्राह्मण हो तो 'वृतोऽस्मि' कहें और यदि अधिक ब्राह्मण हों तो 'वृताः स्मः' इस प्रकार कहें। पश्चात् 'ॐ यदा बध्नन्०' इस मन्त्रके द्वारा ब्राह्मणोंके दाहिने हाथमें रक्तसूत्र (मौली) से रक्षाबन्धन करें।

ब्राह्मणोंका वरण करनेके बाद शिवपूजनकर्ता ब्राह्मणोंसे अभिषेक प्रारम्भ करनेके लिये प्रार्थना करें। पश्चात् ब्राह्मणगण 'ॐ मनो जूतिः०' इत्यादि छः मन्त्रोंसे षडङ्ग-न्यास कर रुद्राभिषेक प्रारम्भ करें।

उत्तरपूजन—अभिषेक करनेके बाद शिवपूजनकर्ता शिवजीका षोडशोपचारसे पूजन करें। पश्चात् सङ्कल्पपूर्वक ब्राह्मणोंको अभिषेककी दक्षिणा और भूयसी दक्षिणा दें। अनन्तर संकल्पपूर्वक ब्राह्मणोंको भोजन करावें अथवा भोजनके निमित्त द्रव्य देवें। पश्चात् शिवपूजनकर्ता 'आवाहनं न जानामि०' इत्यादिके द्वारा भगवान् शिवजीसे क्षमा-प्रार्थना करें।

यजमानका अभिषेक—पश्चात् ब्राह्मणगण 'ॐ द्यौः शान्तिः०। ॐ आपो हिष्ठा०। ॐ यो वः०। ॐ तस्मा ऽअरम्०। ॐ यतोयतः०। ॐ विश्वानि देव सवितः०' इत्यादि मन्त्रोंके द्वारा यजमानका अभिषेक करें।

देवविसर्जन—अभिषेक होनेके बाद आचार्य 'यान्तु देवगणाः सर्वे०' इत्यादिके द्वारा देवताओंका विसर्जन करें।

रक्षा-बन्धन—पश्चात् आचार्य 'ॐ यदा बध्नन्०' इस मन्त्रके द्वारा यजमानके दाहिने हाथमें और उनकी पत्नीके बाएँ हाथमें रक्षा-बन्धन करें।

तिलक—अनन्तर आचार्य अपने हाथमें फल और अक्षत लेकर 'ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रः०' इस मन्त्रसे यजमानके मस्तकमें तिलक करें। पश्चात् आचार्य 'ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या० ॥ १ ॥ ॐ दीर्घायुस्त ऽओषधे० ॥ २ ॥ ॐ विवस्वन्नादित्यैषते० ॥ ३ ॥ इत्यादि मन्त्रोंको पढ़कर यजमानको आशीर्वाद दें।

इति रुद्राभिषेकादिविधिः।

विषय-सूची

अथ षडङ्गन्यासः ।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳसमिमन्दधातु ।
विश्वे देवासऽइहमादयन्तामोꣳ प्रतिष्ठ ॥

ॐ हृदयाय नमः ॥ १ ॥

ॐ अबोध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायतीमुषासम् । यह्वाऽइव प्रवयामुज्जि-
हानाः प्रभानवः सिस्रतेनाकमच्छ ॥

ॐ शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्यावैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् । कविꣳसम्राजमति-
थिञ्जनानामासन्नापात्रञ्जनयन्तदेवाः ॥

ॐ शिखायै वषट् ॥ ३ ॥

ॐ मर्म्माणि ते वर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् । उरोर्वरीयो वरुणस्ते

कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु ॥

ॐ कवचाय हुम् ॥ ४ ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यान्ध-

मति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

ॐ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥

ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः । मानो वीरान्रुद्र भा-

मिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥

ॐ अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥



जगदम्बावलम्बाय निरालम्बाय शूलिने ।
जगत्त्रयकुटुम्बाय नमः साम्बाय शम्भवे ॥

८०

अथ शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी

अथ प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम ॥ १

आहमजानि गर्भधमा त्त्वम [illegible]सि गर्भधम् ॥१॥

गायत्रीत्रिष्टुब्जगंत्त्यनुष्ट्टुप्पङ्क्त्यासह ॥ बृहत्त्यु
ष्णिहांककुप्सुचीभिं÷शम्म्यन्तुत्त्वा ॥२॥ द्विपं
दायाश्च्चतुष्पदास्त्रिपंदायाश्चषट्पंदाः ॥ विच्छं
न्दायाश्चसच्छंन्दाः सुचीभिं÷शम्म्यन्तुत्त्वा॥३॥
सहस्तोंमाः सहछंन्दसऽआवृतं÷सहप्प्रंमाऽऋष
यः सप्तदैव्याः ॥ पूर्व्वैषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽअ
न्वालेभिरेरत्त्थ्योनरश्मीन् ॥४॥ ॐ यज्जाग्ग्रंतो

दूरमुदातिदैवन्तदुसुप्तस्युतथैवाति ॥ दूरङ्गमञ्ज्यो

तिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमनं ÷ शिवसङ्कल्पमस्तु

॥५॥ येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिवि

दथेषुधीराः ॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे

मनं ÷ शिवसङ्कल्पमस्तु ॥ ६ ॥ यत्प्रज्ञानमुतचे

तोधृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽ

ऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्मेमनं ÷ शिवसङ्कल्प

मस्तु ॥७॥ येनेदम्भूतम्भुवंनम्भविष्यत्परिंगृही
तममृतेनसर्व्वम् ॥ येनंयज्ञस्तायतेंसप्तहोतातन्मे
मनं÷शिवसंङ्कल्पमस्तु ॥८॥ यस्मिन्नृचंः सामु
यजूं ᳘षियस्मिन्प्रतिंष्ठितारथनाभाविंवाराः ॥
यस्मिँश्चित्तंः सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनं÷शि
वसंङ्कल्पमस्तु ॥ ९ ॥ सुषारथिरश्वांनिवयन्मनु
ष्यान्नेनीयतेभीशुंभिर्व्वाजिनंऽइव ॥ हृत्प्रतिंष्ठंयद

जिरञ्जविष्ठुन्तन्मेमनं÷शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१०॥

इति रुद्रे प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

★

अथ द्वितीयोऽध्यायः

हरिः÷ ॐ सुहस्रंशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रं पात् ॥ सभूमिं सर्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम् ॥ उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥२॥ एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः ॥ पादोऽस्य

द्विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥ त्रिपाद्

दूर्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभवत्पुनः ॥ ततोवि

ष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततोवि

राडजायतविराजोऽअधिपूरुषः ॥ सजातोऽअत्य

रिच्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्व

हुतःसम्भृतम्पृषदाज्यम् ॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेव्वायव्या

नारण्याग्ग्राम्म्याश्चये ॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहु

तऽऋचः सामानिजज्ञिरे ॥ छन्दांसिजज्ञिरेत
स्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥ तस्मादश्वाऽ
अजायन्तयेकेचोभयादतः ॥ गावोहजज्ञिरेत
स्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥ तंयज्ञम्ब
र्हिषिप्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥ तेनदेवाऽअयज
न्तसाध्याऽऋषयश्चये ॥९॥ यत्पुरुषंव्यदधुः क
तिधाव्यकल्पयन् ॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू

किमूरूपादाऽउच्च्यते ॥ १० ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुख
मासीद्वाहूराजन्यःकृतः ॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः
पद्भ्याᳬंशूद्रोऽअजायत ॥ ११ ॥ चन्द्रमामनसोजा
तश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत ॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राण
श्चमुखादग्निरजायत ॥ १२ ॥ नाभ्याऽआसीदन्त
रिक्षᳯशीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्दिशः
श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ऽअकल्पयन् ॥ १३ ॥ यत्पुरु

षेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत ॥ वसन्तोऽस्यासी

दाज्यङ्ग्रीष्मऽइद्ध्मः शरद्धविः ॥१४॥ सप्तास्यां

सन्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः ॥ देवायद्यज्ञ

न्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥ यज्ञेनय

ज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्यासन् ॥

तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्वेसाध्याःस

न्तिदेवाः ॥१६॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्चवि

श्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे ॥ तस्यत्त्वष्टाविदधद्रूपमे
तितन्मर्त्यस्यदेवत्त्वमाजानमग्ग्रे ॥१७॥ वेदाहमे
तम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसः पुरस्तात् ॥
तमेवविदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्न्यः पन्थाविद्यतेऽय
नाय ॥१८॥ प्रजापतिश्चरतिगर्भेऽअन्तरजाय
मानोबहुधाविजायते ॥ तस्ययोनिम्परिपश्श्यन्ति
धीरास्तस्मिन्हतस्त्थुर्भुवनानिविश्श्वा ॥१९॥ योदे

वेब्भ्यंऽआतपंतियोदेवानाम्पुरोहितः ॥ पूर्वोयोदेवे
ब्भ्योजातोनमोरुचायब्राह्मये ॥२०॥ रुचम्ब्राह्म
ञ्जनयंन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदंब्रुवन् ॥ यस्त्वैवंब्राह्मणो
व्विद्यात्तस्यंदेवाऽअंसन्वशें ॥२१॥ श्रीश्चंतेलक्ष्मी
श्चपत्न्यांवहोरात्रेपार्श्वेनक्षंत्राणिरूपमश्विनौ
व्यात्तंम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मंऽइषाणसर्व्वलोक
म्मंऽइषाण ॥२२॥

इति रुद्रे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

हरिः ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ १ ॥ सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ॥ तदिन्द्रेण जयत तत्सहद्ध्वं युधो नरऽइषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥ सऽइषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सꣳस्रष्टा स युधऽइन्द्रो गणेन ॥ सꣳसृष्ट

जित्त्सोमपाबाहुशर्द्धयुग्ग्रधन्न्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता
॥ ३ ॥ बृहस्प्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२॥ऽअ
पबाधमानः ॥ प्प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधाजय
न्नस्म्माकमेद्ध्यवितारथानाम् ॥ ४ ॥ बलविज्ञाय
स्त्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः ॥
अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमाति
ष्ठगोवित् ॥ ५ ॥ गोत्रभिदङ्गोविदंवज्ज्रबाहुञ्जय

न्तमज्मं प्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमꣳ सजाताऽअनु
वीरयद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनुसꣳ रभद्ध्वम्
॥ ६ ॥ अभिगोत्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरश्श
तमन्न्युरिन्द्रः ॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्यो
ऽस्माकꣳ सेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥ ७॥ इन्द्रऽआसा
न्नेताबृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः ॥ देव
सेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्व

ग्ग्रंम् ॥ ८॥ इन्द्रस्य्वृष्ष्णोव्वरुंणस्यराज्ञंऽआदि
त्यानाम्मरुतांᳫंशर्द्धंऽउग्ग्रम् ॥ महामंनसाम्भुव
नच्यवानाङ्घोषोंदेवानाञ्जयंतामुदंस्त्थात् ॥९॥ उद्धं
र्षयमघवन्नायुंधान्न्युत्सत्त्वंनाम्मामकानाम्मनां
ᳫंसि ॥ उद्वृत्रहन्न्वाजिनांव्वाजिंनान्न्युद्रथांना
ञ्जयंताम्यन्तुघोषांᳫं ॥ १० ॥ अस्म्माकमिन्द्रःᳫंस
मृंतेषुद्ध्वजेष्ष्वस्म्माकंय्याऽइषंवस्ताजंयन्तु ॥

अस्म्माकँव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्म्माँ२ऽउदेवाऽअव
ताहवेषु ॥ ११ ॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृ
हाणाङ्गान्न्यप्वेपरेहि ॥ अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सु
शोकैरन्धेनामित्त्रास्तमसासचन्ताम् ॥१२॥ अव
सृष्ट्टापरापतशरव्व्येब्ब्रह्मसꣳशिते ॥ गच्छामित्त्रा
न्प्प्रपद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषꣳ ॥१३॥ प्प्रेताज
यतानरऽइन्द्रोवꣳ शर्म्मयच्छतु ॥ उग्ग्रावꣳसन्तु

बाहवोनाधृष्ण्यायथासथ ॥ १४॥ असौयासेनाम

रुतः परेषामभ्यैतिनऽओजंसास्पर्द्धमाना ॥ ता

न्गूहततमसापव्रतेनयथामीऽअन्योऽअन्यन्नजा

नन् ॥ १५ ॥ यत्रंबाणाः सम्पतन्तिकुमाराविशि

खाऽइव ॥ तन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्म्मय

च्छतुविश्वाहाशर्म्मयच्छतु ॥ १६ ॥ मर्म्माणितेव

र्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्॥

उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तुन्त्वानुदेवामं
दन्तु ॥ १७ ॥

इति रुद्रे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

★

अथ चतुर्थोऽध्यायः

हरिं÷ॐ व्विभ्राडबृहत्पिबतुसोम्म्यम्मदृध्वा

यर्ज्ञपतावविहृतम ॥ व्वातंजूतोयोऽअभिरक्षं

तिमनोग्ध्रजोऽ पुपोषपुरुधाविराजति ॥ १ ॥ उदु

त्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः ॥ दृशेव्विश्वाय

सूर्य्यम् ॥ २ ॥ येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्ज

नाँ२॥ऽअनु ॥ त्वंव्वरुणपश्यसि ॥ ३ ॥ दैव्यांव

द्ध्वर्य्यूऽआगतᳪरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञ

ᳫसमञ्जाथे ॥ तम्प्रत्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम्

॥४॥ तम्प्रत्नथापूर्व्वथाविश्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्ब

हिँषदँ्ँ स्वर्व्विदम् ॥ प्प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसे धुनि
माशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे ॥५॥ अयंव्वेनश्चोद
यत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमाने ॥ इम
मपाँ्ँ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्न व्विप्प्रामतिभीरिह
न्ति ॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य
व्वरुणस्याग्ग्नेः ॥ आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षँ

अपियथांसुवानोमत्संथानोव्विश्वञ्जगंदभिपित्त्वेमं

नीषा ॥८॥ यदुद्यकन्व्वंवृत्रहन्नुदगांऽअभिसूर्य्य ॥

सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशें ॥ ९ ॥ तरणिर्व्विश्वदंर्शतोज्ज्यो

तिष्कृदंसिसूर्य्य ॥ व्विश्वमाभांसिरोचनम् ॥१०॥

तत्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्मंहित्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्वितं

तंꣳ सञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितं ÷ सधस्त्थादा

द्वात्रीद्वासंस्तनुतेसिमस्म्मै ॥ ११ ॥ तन्मित्रस्य
व्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्त्थे ॥
अनन्तमन्यद्रुशंदस्यपाजं ÷ कृष्ष्णमन्यद्धरितं
सम्भरन्ति ॥ १२ ॥ बण्णमहाँ२॥ऽअंसिसूर्य्यब
डादित्त्यमहाँ२॥ऽअंसि ॥ महस्तेसतोमहिमाप
नस्यतेद्धादेवमहाँ२॥ऽअंसि ॥ १३ ॥ बट्सूर्य्य
श्रवंसामहाँ२॥ऽअंसिसत्रादेवमहाँ२॥ऽअंसि ॥

मन्न्हादुर्वीनामसुच्च ÷ पुरोहितोविभुज्योतिरदा

भ्यम् ॥ १४ ॥ श्रायन्तऽइवसूर्य्यंविश्वेदिन्द्रस्य

भक्षत ॥ वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्रतिभा

गन्नदीधिम ॥१५॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनि

रᳪहसः पिपृतानिरवद्यात् ॥ तन्नोमित्रोवरुणोमा

महन्तामदितिः सिन्धु ÷ पृथिवीऽउतद्यौः ॥ १६ ॥

आकृष्णेनरजसावर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यं

स्व ॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानि पश्यन् ॥१७॥

इति रुद्रे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

★

अथ पञ्चमोऽध्यायः

हरिः ÷ ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवेन मः ÷ ॥ बाहुभ्यामुततेनमः ÷ ॥१॥ यातेरुद्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वाशन्तम

यागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिश

न्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमा

हिंसीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेनवचसात्वागिरि

शाच्छावदामसि ॥ यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसु

मनाऽअसत् ॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ताप्रथमो

दैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चया

तुधान्योऽधराचीः परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्रोऽ

अरुणऽउतबभ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳहेडऽईमहे ॥६॥

असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोविलोहितः ॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः ॥७॥ नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्ज्याम् ॥

याश्चंतेहस्तऽइषंवुः परातांभंगवोंव्वप ॥९॥ व्विज्ज्यु
न्धनुंः कपुर्हिनोंव्विशंल्ल्योबाणंवाँ२॥ऽउत ॥ अनें
शन्नस्युयाऽइषंवऽआभुरंस्यानिषङ्गधिः ॥१०॥ या
तेंहेुतिम्मींढुष्ट्टमहस्तेंबुभूवंतेधनुंः ॥ तयास्म्मा
न्विश्श्वतुस्त्वमंयुक्ष्म्मयापरिंभुज ॥ ११ ॥ परिंतेध
न्न्वंनोहेुतिरस्म्मान्वृंणक्तुव्विश्श्वतंः ॥ अथोयऽइं
षुधिस्तवारेऽअस्म्मान्निधेंहितम ॥१२॥ अवुतत्त्य

धनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यशल्ल्यानां
म्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥१३॥ नमस्तऽआयु
धायानाततायधृष्णवे ॥ उभाब्भ्यामुततेनमोबा
हुब्भ्यान्तवधन्न्वने ॥१४॥ मानोमहान्तमुतमानो
ऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मा
नोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वो
रुद्ररीरिषः ॥१५॥ मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि

मानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्रु
द्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे
॥१६॥ नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशाञ्चपतयेन
मोनमोवृक्षेभ्योहरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतयेनमो
नम ÷ शष्पिञ्जरायत्त्विषीमतेपथीनाम्पतयेनमो
नमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतयेनमोनमो
बभ्लुशाय ॥१७॥ नमोबभ्लुशायव्याधिनेऽन्ना

नाम्पतयेनमोनमोभवस्यहेत्यैजगताम्पतयेनमो
नमोरुद्रायाततायिनेक्षेत्राणाम्पतयेनमोनमः सू
तायाहन्त्यैव्वनानाम्पतयेनमोनमोरोहिताय॥१८॥
नमोरोहितायस्थपतयेवृक्षाणाम्पतयेनमोनमो
भुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतयेनमोनमोम
न्त्रिणेव्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्ग्घो
षायाक्रन्दयतेपत्तीनाम्पतयेनमोनमः कृत्स्नाय

तयां ॥ १८॥ नमः कृत्स्नायतयाधावंतेसत्त्वंनाम्प

तंयेनमोनमः सहंमानायनिव्याधिनंऽआव्याधि

नीनाम्पतंयेनमोनमोनिषङ्गिणेककुभायंस्तेनाना

म्पतंयेनमोनमोनिचेरवेंपरिचरायारंण्यानाम्पतं

येनमोनमोवञ्चते ॥ २० ॥ नमोवञ्चतेपरिवञ्चते

स्तायूनाम्पतंयेनमोनमोनिषङ्गिणंऽइषुधिमतेत

स्कंराणाम्पतंयेनमोनमः सृकायिभ्योजिघांऽ

सद्भ्योमुष्णताम्पतयेनमोनमोऽसिमद्भ्योन
क्तञ्चरद्भ्योविकृन्तानाम्पतयेनम÷ ॥२१॥ न
मऽउष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोन
मऽइषुमद्भ्योधन्वायिभ्यश्चवोनमोनमऽआत
न्वानेभ्य÷ प्रतिदधानेभ्यश्चवोनमोनमऽआय
च्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्चवोनमोनमोविसृज
द्भ्य÷ ॥२२॥ नमोविसृजद्भ्योविध्यद्भ्य

श्च्वोनमोनमः स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्च्वोन

मोनमःशयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च्वोनमोनम

स्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्च्वोनमोनमः सभा

भ्यः ॥२३॥ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्य

श्च्वोनमोनमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च्वोनमोन

मःऽआव्याधिनीभ्योविविध्यन्तीभ्यश्च्वोनमो

नमऽउगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्च्वोनमोनमोगणे

भ्यं÷ ॥ २४ ॥ नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्चवो
नमोनमोव्रातेभ्योव्रातपतिभ्यश्चवोनमोनमोगृ
त्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूपेभ्यो
विश्वरूपेभ्यश्चवोनमोनमः सेनाभ्यः ॥ २५ ॥
नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्चवोनमोनमोरथि
भ्योऽअरथेभ्यश्चवोनमोनमं÷क्षत्तृभ्यं÷ सङ्ग्र
हीतृभ्यश्चवोनमोनमोमहद्भ्योऽअर्भकेभ्यं

श्चवोनमं ÷ ॥ २६ ॥ नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यं
श्चवोनमोनमः कुलालेभ्यः कुर्म्मारेभ्यश्चवो
नमोनमोनिषादेभ्यं ÷ पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवोनमोन
मं ÷ श्वनिभ्योमृगयुभ्यंश्चवोनमोनमः श्व
भ्यं ÷ ॥ २७ ॥ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चवो
नमोनमोभवायंचरुद्रायंचनमं ÷ शर्वायंचपशुपत
येचनमोनीलग्रीवायचशितिकण्ठायचनमं ÷ क

पुर्द्दिने ॥ २८ ॥ नमः कपुर्द्दिने चव्युप्तकेशाय च

नमः सहस्राक्षाय च शुतधन्वने च नमो गिरिशयाय

च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च नमो

ह्रुस्वाय ॥ २९ ॥ नमो ह्रुस्वाय च वामुनाय च नमो

बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्या

य च प्रथमाय च नमऽआशवे ॥ ३० ॥ नमऽआश

वे चाजिराय च नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च नमऽ

ऊर्म्म्यायचावस्वन्न्यायचनमोनादेयायंचद्वीप्प्या
यच ॥ ३१ ॥ नमोज्ज्येष्ठायंचकनिष्ठायंचनमः
पूर्व्वजायंचापरजायंचनमोमद्ध्यमायंचापग
ल्भायंचनमोजघन्न्यायचबुध्न्न्यायचनमः सो
भ्याय ॥ ३२ ॥ नमः सोभ्यायचप्प्रतिसर्य्या
यचनमोयाम्म्यायचक्षेम्म्यायचनमः श्लोक्क्या
यचावसान्न्यायचनमऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायचन

मोवन्न्याय ॥ ३३ ॥ नमोवन्न्यायचकक्ष्यायचन

म ÷ श्श्रवायचप्प्रतिश्श्रवायचनमऽआशुषेणायचा

शुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेचनमोबिल्मिने

॥ ३४ ॥ नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमोवर्म्मिणे

चवरूथिनेचनम ÷ श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायचनमो

दुन्दुभ्यायचाहनन्न्यायचनमोधृष्ष्णवे ॥ ३५ ॥

नमोधृष्ष्णवेचप्प्रमृशायचनमोनिषङ्गिणेचेषुधि

मतचुनमस्तीक्ष्णषवचायुधिनचुनमः स्वायुधाय

चसुधन्वनेच ॥३६॥ नमः स्रुत्यायचपथ्यायच

नमः काट्यायचनीप्यायचनमः कुल्यायचसर

स्यायचनमोनादेयायचवैशन्तायचनमः कूप्या

य ॥ ३७ ॥ नमः कूप्यायचावट्यायचनमोवी

ध्र्यायचातप्यायचनमोमेघ्यायचविद्युत्या

यचनमोवर्ष्यायचावर्ष्यायचनमोवात्याय

॥३८॥ नमोव्वात्त्यायचरेष्म्म्यायचनमोव्वास्तव्व्या

यचव्वास्तुपायचनमः सोमायचरुद्रायचनमस्ता

म्म्रायचारुणायचनमः शुङ्गवे ॥ ३९ ॥ नमः शु

ङ्गवेचपशुपतयेचनमऽउग्ग्रायचभीमायचनमोऽ

ग्ग्रेवधायचदूरेवधायचनमोहन्त्रेचहनीयसेचनमो

वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्योनमस्ताराय ॥४०॥ नमः

शम्भवायचमयोभवायचनमः शङ्करायचमयस्क

रायंचनमं÷शिवायंचाशिवतरायच ॥ ४१ ॥ नमुः
पाऽर्यांय चावाऽर्यायचनमं ÷ प्रतरंणाय चोत्तरंणा
यचनमुस्तीर्थ्यांयचकूल्यांयचनमुः शष्प्यांयचु
फेन्यांयचुनमं÷सिकुत्त्याय ॥ ४२ ॥ नमं÷सिकु
त्त्यायचप्रवाह्यायचनमं ÷ किंशिलायंचक्षयु
णायंचनमं÷कपर्दिनेचपुलस्तयेंचनमंऽइरिण्याय
चप्रपथ्यायचनमोव्रज्यांय ॥ ४३ ॥ नमोव्र

रुद्रा० ४२ अ०

ज्यायचगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्यायचगेह्यायच
नमोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनमः काट्यायचग
ह्वरेष्ठायचनम÷शुष्क्याय॥४४॥नमःशुष्क्या
यचहरित्यायचनमं÷पांसव्यायचरजस्यायच
नमोलोप्यायचोलप्यायचनमऽऊर्व्यायचसूर्व्या
यचनमं÷पर्णायं ॥४५॥ नमं÷पर्णायचपर्ण
शदायचनमंऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमंऽ

आखिदतेचंप्प्रखिदतेचनमं॑ऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्
भ्यंश्चवोनमोनमौंवः॑किरिकेभ्योदेवानांᳪहृदये
भ्योनमौंविचिन्वत्केभ्योनमौंविक्षिणत्केभ्यो
नमं॑ऽआनिर्हतेभ्यं॑÷ ॥४६॥ द्रापेऽअन्धंसस्पतेद
रिंद्रनीलंलोहित ॥ आसाम्प्रजानांमेषाम्पंशूना
म्माभेर्म्मारोङ्मोचंनः॑किञ्चनाममंमत् ॥४७॥ इमा
रुद्रायंतवसेंकपर्दिनेंक्षयद्वीरायप्प्रभंरामहेमती॑ ॥

यथाशमसद्द्विपदेचतुष्पदेविश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअ
स्मिन्ननातुरम् ॥ ४८ ॥ यातेरुद्रशिवातनूःशिवा
विश्वाहाभेषजी ॥ शिवारुतस्यभेषजीतयानोमृ
डजीवसे ॥ ४९ ॥ परिनोरुद्रस्यहेतिर्वृणक्तुपरि
त्वेषस्यदुर्म्मतिरघायोः ॥ अवस्थिरामघवद्भ्य
स्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड ॥ ५० ॥
मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुमनाभव ॥ परमेवृ

क्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंवसानऽआचरपिनाकम्बि
भ्रदागहि ॥५१॥ विकिरिद्रविलोहितनमस्तेऽअ
स्तुभगवः ॥ यास्तेसहस्रंहेतयोऽन्यमस्मन्निव
पन्तुताः ॥ ५२ ॥ सहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तव
हेतयः ॥ तासामीशानोभगवः पराचीनामुखाकृ
धि ॥ ५३ ॥ असंख्यातासहस्राणियेरुद्राऽआधि
भूम्याम् ॥ तेषांसहस्रयोजनेऽवधन्न्वानित

न्न्मासि ॥५४॥ अस्म्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षेभ
वाऽअधि ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवधन्न्वांनित
न्न्मसि ॥ ५५ ॥ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवंᳬरु
द्राऽउपश्श्रिताः ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवधन्न्वां
नितन्न्मसि ॥५६॥ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाᳬश
र्वाऽअधश्क्षमाचराः ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवध
न्न्वांनितन्न्मसि ॥५७॥ येवृक्षषुशष्पिञ्जराऽनी

लंग्ग्रीवाव्विलोहिताः ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवुध

न्न्वांनितन्न्मसि ॥५८॥ येभूतानामधिपतयोवि

शिखासः÷कपर्द्दिनः÷ ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवुध

न्न्वांनितन्न्मसि ॥५९॥ येपथाम्पथिरक्षयऽऐल

बृदाऽआयुर्युधः÷ ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवुध

न्न्वांनितन्न्मसि ॥ ६० ॥ येतीर्त्थानिप्प्रचरन्तिसृ

काहस्तानिषङ्गिणः÷ ॥ तेषांᳬसहस्रयोजनेऽवुध

न्न्वानितन्न्मसि ॥६१॥ येन्नेषुविविद्ध्यन्तिपात्रे
षुपिबतोजनान् ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवधन्न्वा
नितन्न्मसि ॥६२॥ यऽएतावन्तश्चभूयाꣳसश्च
दिशोरुद्द्रावितस्त्थिरे ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेऽवध
न्न्वानितन्न्मसि ॥६३॥ नमोऽस्तुरुद्द्रेब्भ्योयेदि
वियेषांवर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्दशदक्षिणा
दशप्प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽ

अस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनो
द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः ॥ ६४ ॥ नमोऽस्तुरु
द्रेभ्योयेऽन्तरिक्षेयेषांवातऽइषवः ॥ तेभ्योदश
प्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशो
र्ध्वाः ॥ तेभ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृड
यन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्
ध्मः ॥ ६५ ॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेपृथिव्यांयेषा

मन्नमिषवः ॥ तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणादश
प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्योनमोऽअ
स्तुतेनोऽवन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मोयश्चनो
द्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ ६६ ॥

इति रुद्रे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

हरिः ॐ वयꣳ सोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिभ्भ्रतः ॥ प्प्रजावन्तः सचेमहि ॥१॥ एषतेरुद्द्रभागः सहस्वस्स्राऽम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरुद्द्रभागऽआखुस्तेपशुः ॥२॥ अवरुद्द्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथानोव्वस्यसस्करद्यथानः श्श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात् ॥३॥ भेषजमसिभेषजङ्गवे

ऽश्वायपुरुषायभेषुजम् ॥ सुखम्मेषायमेष्यै ॥४॥
त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्व्वारु
कमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥ त्र्यम्बकं
य्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिवब
न्धनादितोमुक्षीयमामुतः ॥ ५ ॥ एतत्तेरुद्राऽव
सन्तेनपरोमूजवतोऽतीहि ॥ अवततधन्वापिना
कावसः कृत्तिवासाऽअहिंसन्नः शिवोऽतीहि ॥६॥

त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥ ७ ॥ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्प्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥८॥

इति रुद्रे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

★

अथ सप्तमोऽध्यायः

हरिः ॐ उग्रश्चभीमश्चध्वान्तश्चधुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वाचविक्षिपःस्वाहा ॥१॥ अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳहृदयाग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेनभवंय्यक्ना ॥ शर्वम्मतस्नाभ्यामीशानम्मन्युनामहादेवमन्तःपर्शव्येनोग्रन्देवंव्वनिष्ठुनांव्वसिष्ठहनुःशिङ्गीनिकोश्याभ्याम् ॥२॥ उग्रं

ल्लोहितेनामित्रः सौव्रत्त्येनरुद्रन्दौर्व्रत्त्येनेन्द्रं
म्प्रक्रीडेनमरुतोबलेनसाद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भव
स्यकण्ठ्यंः रुद्रस्यान्तःपार्श्व्यम्महादेवस्ययकृ
च्छर्वस्यंवनिष्ठुःपशुपतेःपुरीतत् ॥३॥ लोमभ्यः
स्वाहालोमभ्यः स्वाहात्वचेस्वाहात्वचेस्वाहालो
हितायस्वाहालोहितायस्वाहामेदोभ्यःस्वाहामे
दोभ्यःस्वाहा ॥ माꣳसेभ्यःस्वाहामाꣳसेभ्यः

स्वाहा॒स्नाव॑भ्य॒ः स्वाहा॒स्नाव॑भ्य॒ः स्वाहा॒ऽस्थ
भ्य॒ः स्वाहा॒ऽस्थभ्य॒ः स्वाहा॑म॒ज्जभ्य॒ः स्वाहा॑
म॒ज्जभ्य॒ः स्वाहा॑ ॥ रेत॑से॒ स्वाहा॑ पा॒यवे॒ स्वाहा॑ ॥४॥
आ॒या॒साय॒ स्वाहा॑ प्राया॒साय॒ स्वाहा॑ सं॒या॒साय॒ स्वा
हा॑ वि॒या॒साय॒ स्वाहो॑द्या॒साय॒ स्वाहा॑ ॥ शु॒चे स्वाहा॒
शोच॑ते॒ स्वाहा॒ शोच॑मानाय॒ स्वाहा॒ शोका॑य॒ स्वाहा॑
॥५॥ तप॑से॒ स्वाहा॒ तप्य॑ते॒ स्वाहा॒ तप्य॑मानाय॒ स्वाहा॑

तप्तायस्वाहांघर्मायस्वाहां ॥ निष्कृत्यैस्वाहा
प्रायश्चित्यैस्वाहांभेषजायस्वाहां ॥६॥ यमाय
स्वाहाऽन्तकायस्वाहांमृत्यवेस्वाहां ॥ ब्रह्मणेस्वा
हांब्रह्महत्यायैस्वाहाविश्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहा
द्यावांपृथिवीभ्याᳬंस्वाहां ॥७॥

इति रुद्रे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ अष्टमोऽध्यायः

हरिः ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१॥ प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तञ्च मऽआधीतञ्च मे वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे

बलञ्चमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥२॥ ओजंश्चचमेसहं

श्चचमऽआत्माचंमेतनूश्चंमेशर्म्मचमेवर्म्मचमेऽ

ङ्गांनिचमेऽस्थीनिचमेपरूंषिचमेशरीरांणिचमु

ऽआयुंश्चचमेजराचंमेयुज्ञेनंकल्पन्ताम् ॥ ३ ॥

ज्यैष्ठ्यंञ्चमुऽआधिंपत्त्यञ्चमेमुन्युश्चंमेभामंश्चचु

मेऽमंश्चचमेऽम्भंश्चचमेजेमाचंमेमहिमाचंमेवरिमा

चंमेप्रथिमाचंमेवर्षिमाचंमेद्राघिमाचंमेवृद्धञ्चं

मेव्वृद्धिश्श्चमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ४ ॥ (न०) ॥
सत्त्यञ्चमेश्श्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेविश्श्वञ्चमे
महश्श्चमेक्क्रीडाचमेमोदश्श्चमेजातञ्चमेजानि
ष्यमाणञ्चमेसूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयुज्ञेनकल्प
न्ताम् ॥ ५ ॥ ऋतञ्चमेऽमृतञ्चमेऽयुक्ष्मञ्चमेऽना
मयच्चमेजीवातुश्श्चमेदीर्घायुत्त्वञ्चमेऽनमित्रञ्च
मेऽभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूषाश्श्चमेसुदिन

ञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ६ ॥ यन्ताचमेधर्त्ताच

मेक्षेमश्चचमेधृतिश्चचमेविश्वञ्चमेमहश्चचमेसं

विच्चमेज्ञात्रञ्चमेसूश्चचमेप्रसूश्चचमेसीरञ्चमेलय

श्चचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ७ ॥ शञ्चमेमयश्चच

मेप्रियञ्चमेऽनुकामश्चचमेकामश्चचमेसौमनस

श्चचमेभगश्चचमेद्रविणञ्चमेभद्रञ्चमेश्रेयश्चच

मेवसीयश्चचमेयशश्चचमेयज्ञेनकल्पन्ताम्

॥८॥ (न०) ॥ ऊर्क्कचँमेसूनृताचमेपयश्चमे
रसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्धिश्चमेसपीति
श्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रञ्चमऽऔद्भि
द्यञ्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ९ ॥ रयिश्चमेराय
श्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमेविभुचमेप्रभुचमेपूर्ण्ण
ञ्चमेपूर्ण्णतरञ्चमेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नञ्चमेऽक्षु
च्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १० ॥ वित्तञ्चमेवेद्यञ्च

मेभूतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चमऽऋ
द्धञ्चमुऽऋद्धिश्चमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्चमेमुतिश्चमे
सुमतिश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ ११ ॥ व्रीहय
श्चमेयवाश्चमेमाषाश्चमेतिलाश्चमेमुद्गाश्च
मेखल्वाश्चमेप्रियङ्गवश्चमेऽणवश्चमेश्या
माकाश्चमेनीवाराश्चमेगोधूमाश्चमेमसूरा
श्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १२ ॥ (न०)

अश्म्मांचमेमृत्तिकाचमेगिरयंश्च्चमेपर्व्वताश्च्च
मेसिकंताश्च्चमेव्वनस्प्पतंयश्च्चमेहिरंण्णयञ्चमेऽ
यंश्च्चमेश्यामञ्चंमेलोहञ्चंमेसीसञ्चमेत्रपुंचमेयज्ञे
नंकल्प्पन्ताम् ॥ १३ ॥ अग्निश्च्चंमऽआपंश्च्च
मेव्वीरुधंश्च्चमऽओषंधयश्च्चमेकृष्टपच्याश्च्चं
मेऽकृष्टपच्याश्च्चंमेग्ग्राम्म्याश्च्चंमेपशवंऽआर
ण्ण्याश्च्चंमेव्वित्तञ्चमेव्वित्तिश्च्चमेभूतञ्चमेभूतिश्च्च

मेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १४ ॥ व्वसुचमेव्वसतिश्च्च
मेकर्म्मंचमेशक्तिश्चमेऽर्थंश्चमुऽएमंश्चमऽइत्या
चंमेगतिश्चमेयुज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१५॥ (न०) ॥
अग्निश्चंमुऽइन्द्रंश्चमेसोमंश्चमुऽइन्द्रंश्चमेसवि
ताचंमुऽइन्द्रंश्चमुसरंस्वतीचमुऽइन्द्रंश्चमेपूषाचं
मुऽइन्द्रंश्चमेबृहस्पतिश्च्चमुऽइन्द्रंश्चमेयुज्ञेनं
कल्पन्ताम् ॥१६॥ मित्रश्च्चंमुऽइन्द्रंश्च्चमेव्वरुं

णश्चमुऽइन्द्रश्चमेधाताचमुऽइन्द्रश्चमेत्व
ष्टाचमुऽइन्द्रश्चमेमुरुतश्चमुऽइन्द्रश्चमेवि
श्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१७॥
पृथिवीचमुऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्षञ्चमुऽइन्द्रश्चमे
द्यौश्चमुऽइन्द्रश्चमेसमाश्चमुऽइन्द्रश्चमे
नक्षत्राणिचमुऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमुऽइन्द्रश्च
मेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१८॥ (नं०) ॥ अंशुश्च

मेराँश्म्मश्च्चमेऽदाभ्यश्च्चमेऽधिपतिश्च्चमेऽउ

ँशुश्च्चमेऽन्तर्य्यामश्च्चमेऽऐन्द्रवायवश्च्चमे

मैत्रावरुणश्च्चमेऽआश्श्विनश्च्चमेप्प्रतिप्रस्थानश्च्चमे

शुक्रश्च्चमेमन्थीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥ १८ ॥

आग्ग्रयणश्च्चमेव्वैश्श्वदेवश्च्चमेद्ध्रुवश्च्चमेव्वैश्श्वानर

श्च्चमऽऐन्द्राग्ग्नश्च्चमेमहाव्वैश्श्वदेवश्च्चमेमरुत्त्वती

यांश्च्चमेनिष्क्केवल्ल्यश्च्चमेसावित्रश्च्चमेसारस्वत

श्चमेपात्नीवतश्चमेहारियोजनश्चमेयज्ञेनक
ल्पन्ताम् ॥ २० ॥ स्रुचश्चमेचमसाश्चमेवाय
व्यानिचमेद्रोणकलशश्चमेग्रावाणश्चमेऽधि
षवणेचमेपूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमेवेदिश्च
मेबर्हिश्चमेऽवभृथश्चमेस्वगाकारश्चमेयज्ञे
नंकल्पन्ताम् ॥२१॥ (न०) ॥ अग्निश्चमेघ
र्म्मश्चमेऽर्कश्चमेसूर्यश्चमेप्राणश्चमेऽश्वमेध

श्च मे पृथिवी च मेऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽ
ङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्
॥२२॥ व्रतञ्च मऽऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च
मेऽहोरात्रेऽऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्प
न्ताम् ॥२३॥ (न०) ॥ एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च
मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म
ऽएकादश च मऽएकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोद

शचमेपञ्चदशचमेपञ्चदशचमेसप्तदशचमेसप्तद
शचमेनवदशचमेनवदशचमऽएकविꣳशतिश्चच
मेऽएकविꣳशतिश्चचमेत्रयोविꣳशतिश्चचमेत्रयो
विꣳशतिश्चचमेपञ्चविꣳशतिश्चचमेपञ्चविꣳशति
श्चचमेसप्तविꣳशतिश्चचमेसप्तविꣳशतिश्चचमे
नवविꣳशतिश्चचमेनवविꣳशतिश्चचमऽएकत्रिꣳ
शच्चमऽएकत्रिꣳशच्चमेत्रयस्त्रिꣳशच्चमेयज्ञेनक

ल्पन्ताम् ॥२४॥ (न०) ॥ चतस्रश्चमेऽष्टौच
मेऽष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमेषोडश
चमेविꣳशतिश्चमेविꣳशतिश्चमेचतुर्विꣳशति
श्चमेचतुर्विꣳशतिश्चमेऽष्टाविꣳशतिश्चमेऽ
ष्टाविꣳशतिश्चमेद्वात्रिꣳशच्चमेद्वात्रिꣳशच्चमे
षट्त्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमेचत्वारिꣳशच्चमेच
त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्वारिꣳशच्चमेचतुश्च

त्त्वारिꣳशच्चमेऽष्टाचत्त्वारिꣳशच्चमेयज्ञेनकल्प
न्ताम् ॥२५॥ [न०] ॥ त्र्यविश्चमेत्र्यवीचमे
दित्यवाट्चमेदित्यौहीचमेपञ्चाविश्चमेपञ्चावी
चमेत्रिवत्सश्चमेत्रिवत्साचमेतुर्य्यवाट्चमेतु
र्य्यौहीचमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥२६॥ पष्ठवाट्च
मेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमेवशाचमऽऋषभश्चमे
वेहच्चमेऽनड्वाँश्चमेधेनुश्चमेयज्ञेनकल्प

न्ताम् ॥ २७॥ [न०] ॥ व्वाजायस्वाहाप्प्रसवाय
स्वाहाऽपिजायस्वाहाक्क्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वाहाऽह
र्प्पतयेस्वाहाह्नेमुग्धायस्वाहामुग्धायव्वैनꣳशिनाय
स्वाहाव्विनꣳशिनऽआन्त्यायनायस्वाहान्त्याय
भौवनायस्वाहाभुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतयेस्वा
हाप्प्रजापतयेस्वाहा ॥ इयन्तेराण्मित्राययन्ता
सियमनऽऊर्ज्जेत्वाव्वृष्ट्यैत्वाप्प्रजानान्त्वाधिप

त्याय ॥२८॥ आयुर्यज्ञेनकल्पताम्प्राणोयज्ञे
नकल्पताञ्चक्षुर्यज्ञेनकल्पताꣳश्रोत्रंयज्ञेनक
ल्पताँवाग्यज्ञेनकल्पताम्मनोयज्ञेनकल्पतामा
त्मायज्ञेनकल्पताम्ब्रह्मायज्ञेनकल्पताञ्ज्योति
र्यज्ञेनकल्पताꣳस्वर्यज्ञेनकल्पताम्पृष्ठंयज्ञेनकल्पताँयज्ञोयज्ञेनकल्पताम् ॥ स्तोमश्च
यजुश्चऋक्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च ॥ स्वर्दे

वाऽअगन्ममामृताऽअभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽअभू
मुब्वेट्स्वाहा ॥२९॥

इत्यष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

★

अथ शान्त्यध्यायः

हरिः ॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्प्रपद्ये
सामप्प्राणम्प्रपद्येचक्षुः श्श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ व्वागोजः

सहौजोमयिप्राणापानौ ॥ १ ॥ यन्मेछिद्रञ्चक्षुषो
हृदयस्यमनसोवातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मेतद्दधातु ॥
शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः ॥ २ ॥ भूर्भुवः
स्वः । तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियो
योनःप्रचोदयात् ॥ ३ ॥ कयानश्चित्रऽआभुव
दूतीसदावृधस्सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥ ४ ॥
कस्त्वासत्योमदानाम्मंहिष्ठोमत्सदन्धसः ॥

दृढाचिंदारुजेव्वसु ॥५॥ अभीषुण॒ सखीनामविता
जरितॄणाम् ॥ शतम्भवास्युतिभि॑ ॥ ६ ॥ कया
त्वन्नऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृब्भ्य
ऽआभर ॥ ७ ॥ इन्द्रोव्विश्वस्यराजति ॥ शन्नो
ऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्प्पदे ॥ ८ ॥ शन्नोमित्र॒ शं
व्वरुण॒ शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्प
तिः शन्नोव्विष्णुरुरुक्क्रम॒ ॥९॥ शन्नोव्वात॑ पव

ताꣳशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः

पर्ज्जन्योऽअभिवर्षतु ॥१०॥ अहानिशम्भवन्तुनः

शꣳरात्रीः प्प्रतिधीयताम् ॥ शन्नऽइन्द्राग्नीभव

तामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽ

इन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुवितायशं

य्योः ॥११॥ शन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तु

पीतये ॥ शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥१२॥ स्योना

पृथिविनोभवान्नृक्षुरानिवेशंनी ॥ यच्छांनुः शर्म्मं
सुप्प्रथांः ॥१३॥ आपोहिष्ठामंयोभुवस्तानंऽऊर्ज्जे
दंधातन ॥ मुहेरणांयुचक्षंसे ॥१४॥ योवं÷शिव
तमोरसुस्तस्यंभाजयतेुहनं÷ ॥ उुशतीरिंवमातरं÷
॥ १५ ॥ तस्म्मुाऽअरंङ्गमामवोयस्युक्षयांयुजि
न्न्वंथ ॥ आपोंजुनयंथाचनः ॥१६॥ द्यौःशान्ति
रुन्तरिंक्षुᳬशान्ति ÷ पृथिवीशान्तिरापुः शान्तिरो

षंधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः
शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेवशा
न्तिः सामाशान्तिरेधि ॥१७॥ दृतेदृंहमामित्र
स्यमाचक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥ मित्र
स्याहञ्चक्षुषासर्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥ मित्रस्यच
क्षुषासमीक्षामहे ॥१८॥ दृतेदृंहमा। ज्योक्ते
सन्दृशिजीव्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासम्

॥१८॥ नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्चिषे ॥
अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः ÷ पावकोऽअस्म
भ्यꣳ शिवोभव ॥२०॥ नमस्तेऽअस्तुविद्युतेनम
स्तेस्तनयित्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतःस्वः ÷
समीहसे ॥२१॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभ
यङ्कुरु ॥ शन्नः ÷ कुरुप्रजाभ्योऽभयन्नःपशुभ्यः ÷
॥२२॥ सुमित्रियानऽआपऽओषधयःसन्तु

र्म्मित्रियास्तस्मैसन्तुयोऽस्मान्द्वेष्टियञ्चवयं
न्द्विष्मः ॥ २३ ॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क
मुच्चरत् ॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳ
शृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवामशरदः शतमदीनाः
स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् ॥२४॥

इति शान्त्यध्यायः ।

अथ स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ।

हरिः ॐ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥ २ ॥

ॐ व्विष्ष्णोर्रराटमसिव्विष्ष्णोः श्नप्त्रेस्त्थोव्वि
ष्ष्णोः स्यूरसिव्विष्ष्णोर्द्ध्रुवोऽसि ॥ व्वैष्ष्णवम
सिव्विष्ष्णवेत्त्वा ॥ ३ ॥ ॐ अग्निर्द्देवताव्वातोदेव
तासूर्य्योदेवताचन्द्रमादेवताव्वसवोदेवतारुद्द्रादेव
ताऽऽदित्त्यादेवतामरुतोदेवताव्विश्श्वेदेवादेवताबृह
स्प्पतिर्द्देवतेन्द्द्रोदेवताव्वरुणोदेवता ॥ ४ ॥

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै

नमो नमः ॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां
भवोद्भवाय नमः ॥ ५ ॥ वामदेवाय नमो
ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय
नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो
बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदम-
नाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ ६ ॥ अघोरेभ्यो-
ऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्व-

शर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ ७ ॥
तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो
रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ८ ॥ ईशानः सर्वविद्याना-
मीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधि-
पतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥
ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमंस्ते
ऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यां

यप्प्रजनंनायरायस्प्पोषायसुप्रजास्त्वायंसुवीर्य्याय ॥१०॥ ॐ व्विश्वानिदेवसवितर्द्दुरितानिपरासुव ॥ यद्भुद्रन्तन्नऽआसुव ॥११॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षᳬ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वᳬ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥१२॥ ॐ सर्व्वेषां वा एष

व्वेदानाᳬरसो यत्साम सर्व्वेषामेवैनमेतद्व्वेदानाᳬ रसेनाभिषिञ्चति ॥ १३ ॥

इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

अनेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयतां न मम ।

ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ।

इति रुद्राष्टाध्यायी समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

अथ रुद्रयागहवनमन्त्राः

एकषष्ट्युत्तरशतधाविभागपक्षमाश्रित्य

रुद्रस्वाहाकारविधिः

ॐ गणानान्त्वा० स्वाहा ।

ॐ अम्बेऽ अम्बिके० स्वाहा । इति हुत्वा,

ॐ यज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ सहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ आशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ विभ्राड् बृहत्पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐ भूः, ॐ भुवः, ॐ स्वः, ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिꣳसीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि। यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्। अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनꣳ रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैषाꣳ हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः। उतैनङ्गोपाऽ अदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सः दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो येऽ अस्य सत्त्वानो हन्तेभ्योऽकरन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्न्योंर्ज्ज्याम् । याश्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ऽ उत । अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः । तयास्म्मान्न्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्न्वनो हेतिरस्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः । अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे । निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्ण्णवे । उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यान्तव धन्न्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽ अब्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षि-

तम् । मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्न्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽ अश्श्वेषु रीरिषः। मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥१६॥

ॐनमो हिरण्यबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ॥ १७ ॥

ॐनमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १८ ॥

ॐनमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ १९ ॥

ॐनमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २० ॥

ॐनमो बब्भ्लुशाय व्व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २१ ॥

ॐनमो भवस्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐनमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २३ ॥

ॐनमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐनमो रोहिताय स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐनमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐनमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २७ ॥

ॐनमऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐनमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐनमः सहमानाय निव्याधिनऽ आव्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३०॥

ॐनमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐनमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐनमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐनमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐनमः सृकायिभ्यो जिघाᳬसद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥३५॥

ॐनमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३६॥

ॐनमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥ ३७ ॥

ॐनमऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३८ ॥

ॐ नमऽ आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ३९ ॥
ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४० ॥
ॐ नमो विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४१ ॥
ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४२ ॥
ॐ नमः शयानेभ्यऽ आसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४३ ॥
ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४४ ॥
ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४५ ॥
ॐ नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४६ ॥
ॐ नमऽ आव्याधिनीभ्यो विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४७ ॥
ॐ नमऽ उगणाभ्यस्तृंहतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४८ ॥
ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ४९ ॥
ॐ नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५० ॥
ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५१ ॥

ॐ नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५२ ॥
ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५३ ॥
ॐ नमो रथिभ्योऽ अरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५४ ॥
ॐ नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५५ ॥
ॐ नमो महद्भ्योऽ अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५६ ॥
ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५७ ॥
ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५८ ॥
ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ५९ ॥
ॐ नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६० ॥
ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ ६१ ॥
ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ ६२ ॥
ॐ नमः शर्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥ ६३ ॥
ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥ ६४ ॥

ॐनमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥ ६५ ॥

ॐनमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥ ६६ ॥

ॐनमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥ ६७ ॥

ॐनमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥ ६८ ॥

ॐनमो ह्रस्वाय च वामनाय च स्वाहा ॥ ६९ ॥

ॐनमो बृहते च वर्षीयसे च स्वाहा ॥ ७० ॥

ॐनमो वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥ ७१ ॥

ॐनमोऽग्र्याय च प्रथमाय च स्वाहा ॥ ७२ ॥

ॐनमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥ ७३ ॥

ॐनमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च स्वाहा ॥ ७४ ॥

ॐनमऽ ऊर्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ॥ ७५ ॥

ॐनमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा ॥ ७६ ॥

ॐनमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥ ७७ ॥

ॐनमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥ ७८ ॥
ॐनमो मदूध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥ ७९ ॥
ॐनमो जघन्न्याय च बुदूध्न्याय च स्वाहा ॥ ८० ॥
ॐनमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥ ८१ ॥
ॐनमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥ ८२ ॥
ॐनमः श्श्लोक्क्याय चावसान्न्याय च स्वाहा ॥ ८३ ॥
ॐनमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा ॥ ८४ ॥
ॐनमो व्वन्न्याय च कक्क्ष्याय च स्वाहा ॥ ८५ ॥
ॐनमः श्श्रवाय च प्प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा ॥ ८६ ॥
ॐनमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥ ८७ ॥
ॐनमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥ ८८ ॥
ॐनमो बिल्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥ ८९ ॥
ॐनमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा ॥ ९० ॥

ॐ नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥ ९१ ॥
ॐ नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च स्वाहा ॥ ९२ ॥
ॐ नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च स्वाहा ॥ ९३ ॥
ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥ ९४ ॥
ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥ ९५ ॥
ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥ ९६ ॥
ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च स्वाहा ॥ ९७ ॥
ॐ नमः काट्याय च नीप्याय च स्वाहा ॥ ९८ ॥
ॐ नमः कुल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥ ९९ ॥
ॐ नमो नादेयाय च वैशन्ताय च स्वाहा ॥ १०० ॥
ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च स्वाहा ॥ १०१ ॥
ॐ नमो वीध्र्याय चातप्याय च स्वाहा ॥ १०२ ॥
ॐ नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा ॥ १०३ ॥

ॐनमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥ १०४ ॥

ॐनमो व्वात्याय च रेष्म्याय च स्वाहा ॥ १०५ ॥

ॐनमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥ १०६ ॥

ॐनमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥ १०७ ॥

ॐनमस्ताम्राय चारुणाय च स्वाहा ॥ १०८ ॥

ॐनमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥ १०९ ॥

ॐनमऽ उग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥ ११० ॥

ॐनमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥ १११ ॥

ॐनमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥ ११२ ॥

ॐनमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा ॥ ११३ ॥

ॐनमस्ताराय स्वाहा ॥ ११४ ॥

ॐनमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥ ११५ ॥

ॐनमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥ ११६ ॥

रुद्र॰ १००

ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥ ११७ ॥
ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥ ११८ ॥
ॐ नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥ ११९ ॥
ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥ १२० ॥
ॐ नमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा ॥ १२१ ॥
ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ॥ १२२ ॥
ॐ नमः किंठ० शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥ १२३ ॥
ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥ १२४ ॥
ॐ नमऽ इरिण्ण्याय च प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥ १२५ ॥
ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥ १२६ ॥
ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥ १२७ ॥
ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥ १२८ ॥
ॐ नमः काट्ट्याय च गह्वरेष्ठ्याय च स्वाहा ॥ १२९ ॥

स्वा. १००

ॐ॑नमः शुष्क्याय च हरित्याय च स्वाहा ॥ १३० ॥
ॐ॑नमः पाᳬंसव्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥ १३१ ॥
ॐ॑नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा ॥ १३२ ॥
ॐ॑नमऽ ऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा ॥ १३३ ॥
ॐ॑नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥ १३४ ॥
ॐ॑नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ॥ १३५ ॥
ॐ॑नमऽ आखिदते च प्रखिदते च स्वाहा ॥ १३६ ॥
ॐ॑नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ १३७ ॥
ॐ॑नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १३८ ॥
ॐ॑नमो विचिन्वत्केभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १३९ ॥
ॐ॑नमो विक्षिणत्केभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १४० ॥
ॐ॑नमऽ आनिर्हतेभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ १४१ ॥
ॐ॑द्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित । आसाम्प्रजाना-

मेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ् मो च नः किञ्चनाममत् स्वाहा ॥ १४२ ॥

ॐइमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टं ग्रामेऽ
अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ १४३ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ।
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥ १४४ ॥

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय
मृड स्वाहा ॥ १४५ ॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव । परमे वृक्षऽ आयुध-
न्निधाय कृतिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि स्वाहा ॥ १४६ ॥

ॐ व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः ।
यास्ते सहस्रꣳ हेतयोऽन्न्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥ १४७ ॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥ १४८ ॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्म्याम् ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १४९ ॥

ॐ अस्मिन्न्महत्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५० ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः दिवᳬं रुद्राऽ उपश्श्रिताः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५१ ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजऽनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५२ ॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५३ ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।

तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५४ ॥

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५५ ॥

ॐ ये तीर्त्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५६ ॥

ॐ येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५७ ॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाᳬंसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १५८ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १५९ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽ इषवः । तेभ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १६० ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्व्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः । तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १६१ ॥

ॐभूः, ॐभुवः, ॐस्वः । ॐव्वयर्ठं० सोम० (८ मन्त्राः) [पाठमात्रम्] ।

ॐउग्रश्च० (७ मन्त्राः) [पाठमात्रम्] ।

ॐव्वाजश्च० ॥ १ ॥ प्प्राणश्च० ॥ २ ॥ ओजश्च० ॥ ३ ॥ ज्यैष्ठ्यं च० ॥४॥ स्वाहा ।

२–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐसत्यञ्च० ॥१॥ ऋतञ्च० ॥२॥ यन्ता च० ॥३॥ शञ्च० ॥४॥ स्वाहा ।

३–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐऊर्क् च० ॥१॥ रयिश्च० ॥२॥ वित्तञ्च० ॥३॥ व्रीहयश्च ॥४॥ स्वाहा ।

४–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअश्मा च० ॥ १ ॥ अग्निश्च० ॥ २ ॥ वसु च० ॥ ३ ॥ स्वाहा ।

५–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअग्निश्च मऽ इन्द्रश्च० ॥१॥ मित्रश्च० ॥२॥ पृथिवी च० ॥३॥ स्वाहा ।

६–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअꣳशु० शुक्रश्च० ॥१॥ आग्रयणश्च० ॥२॥ स्रुचश्च० ॥३॥ स्वाहा ।

७–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐअग्निश्च० ॥१॥ व्रतञ्च० ॥२॥ स्वाहा ।

८–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐएका च० ॥१॥ स्वाहा ।

९–ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐचतस्रश्च० ॥१॥ स्वाहा ।

१०-ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐत्र्यविश्च० ॥१॥ पष्ठवाट् च० ॥२॥ स्वाहा ।

(पुनः) ॐयज्जाग्रतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐसहस्रशीर्षा० (१६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐअद्भ्यः सम्भृतः० (६ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐआशुः शिशानः० (१२ मन्त्राः) स्वाहा ।

ॐविभ्राड् बृहत् पिबतु० (१७ मन्त्राः) स्वाहा ।

११-ॐनमस्ते० (१६१ आहुतयः) ।

ॐवाजाय स्वाहा० ॥ १ ॥ आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्० ॥ २ ॥ स्वाहा ।

ॐऋचं वाचम्० स्वाहा । ॐयन्मे छिद्रम्० स्वाहा ।

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुः० स्वाहा । ॐकयानश्चित्रः० स्वाहा ।

ॐकस्त्वा सत्यो मदानाम्० स्वाहा । ॐअभी षु णः० स्वाहा ।

ॐकया त्वन्नऽ ऊत्याभि० स्वाहा । ॐइन्द्रो विश्वस्य० स्वाहा ।
ॐशं नो मित्रः शं वरुणः० स्वाहा । ॐशं नो वातः पवताᳪ शं नः० स्वाहा ।
ॐअहानि शं भवन्तु नः० स्वाहा । ॐशन्नो देवीः० स्वाहा ।
ॐस्योना पृथिवि० स्वाहा । ॐआपो हि ष्ठा० स्वाहा ।
ॐयो वः शिवतमो रसः० स्वाहा । ॐतस्माऽ अरं गमाम वः० स्वाहा ।
ॐद्यौः शान्तिः० स्वाहा । ॐदृते दृᳬह मा मित्रस्य मा चक्षुषा० स्वाहा ।
ॐदृते दृᳬह मा ज्योक्ते० स्वाहा । ॐनमस्ते हरसे शोचिषे० स्वाहा ।
ॐनमस्तेऽ अस्तु विद्युते० स्वाहा । ॐयतो-यतः समीहसे० स्वाहा ।
ॐसुमित्रिया नऽ आपः० स्वाहा । ॐतच्चक्षुर्देवहितम्० स्वाहा ।
ॐसद्योजातम्० (५ मन्त्राः) [पाठमात्रम्] ।

ततः षडङ्गन्यासं कुर्यादिति ।

इति रुद्रयागहवनमन्त्राः ।

(१) अथ [1]रुद्रयागस्य षड्भिः प्रकारैर्हवनमन्त्रविभागस्तत्र एकधाहवनमन्त्रविभागपक्षः प्रथमः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥

इति षट्षष्ठिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

(२) अथ त्रेधाहवनमन्त्रविभागपक्षः द्वितीयः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ॥

इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २ ॥

---

१ रुद्रयागे सर्वत्र रौद्राध्यायस्यार्षेयादिकं स्मृत्वा 'श्रीमहारुद्रप्रीतये होमे विनियोगः' इति कथनीयम् ।

ॐ नमः सुत्यायेत्यारभ्य तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥

इति त्रिंशन्मन्त्राणामेकाहुतिः ॥ ३ ॥

(३) अथ षोढा (षडधा) हवनमन्त्रविभागपक्षस्तृतीयः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥

इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ॥

इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २ ॥

ॐ नमः सुत्यायेत्यारभ्य स ऽ एतावन्तश्च० मसि स्वाहा ॥

इति सप्तविंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ ३ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राची० तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वात इषवः । तेभ्यो दश प्राची॰
तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राची॰
तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ६ ॥

(४) अथ षोडशधा हवनमन्त्रविभागपक्षश्चतुर्थः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव इत्यारभ्य अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥
इति षड्विंशतिमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्य इत्यारभ्य सुधन्वने च स्वाहा ।
इति दशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २ ॥

ॐ नमः सुत्यायेत्यारभ्य पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ।
इति सप्तदशमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ ३ ॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम् ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ।
तेषाᳬं सहस्रयोजऽनेव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳬं रुद्राऽ उपश्रिताः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽ अधः क्षमाचराः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ ये पथां पथिरक्षयऽ ऐलबृदाऽ आयुर्य्युधः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ येऽन्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ य एतावन्तश्च भूयाᳬंसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे ।
तेषाᳬं सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश० ।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० नमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां वातऽ इषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश० ।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० नमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश० ।
तेभ्यो नमोऽ अस्तु तेनोऽवन्तु तेनो० नमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥१६॥

(५) अथ चतुश्चत्वारिंशद्धवनमन्त्रविभागपक्षः पञ्चमः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० मुत ते नमः स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा० भि चाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त० पुरुषञ्जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन त्त्वचसा० सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता० परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्रो० ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति० उतैनं गोपा० मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय० तेब्भ्योऽकरन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयो० भगवो त्त्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो० निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते० परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्वनो हेति० निधेहि तम् स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ. सहस्राक्ष० सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधाया० धन्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत० रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके० हवामहे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे० स्वाहा । ॐ नमो बभ्लुशाय० । ॐ नमो रोहि-
ताय० स्वाहा । ॐ नमः कृत्स्नायतया० स्वाहा । ॐ नमो व्वञ्चते०
न्विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १७ ॥

ॐ नमऽ उष्णीषिणे० स्वाहा । ॐ नमो न्विसृजद्भ्यो० स्वाहा । ॐ नमः
सभाभ्यः० स्वाहा । ॐ नमो गणेभ्यो० स्वाहा । ॐ नमः सेनाभ्यः०
अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १८ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो॰ स्वाहा । ॐ नमः श्वभ्यः॰ स्वाहा । ॐ नमः कपर्दिने॰ स्वाहा । ॐ नमो ह्रस्वाय॰ स्वाहा । ॐ नमऽ आशवे॰ स्वाहा ।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुति ॥ १९ ॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय॰ स्वाहा । ॐ नमः सोम्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो ब्वन्न्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो बिल्मिने॰ स्वाहा । ॐ नमो धृष्णवे॰
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २० ॥

ॐ नमः स्रुत्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः कूप्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो व्वा-त्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः शङ्गवे॰ नमस्ताराय स्वाहा ।
इति मन्त्रचतुष्टयस्यैकाहुतिः ॥ २१ ॥

ॐ नमः शम्भवाय॰ शिवतराय च स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ नमः पार्य्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः सिकत्याय॰ स्वाहा । ॐ नमो व्व-ज्ज्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः शुष्क्याय॰ स्वाहा । ॐ नमः पर्ण्णाय॰ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ।
इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २३ ॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवानाᳬं हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो

विक्षिणत्केभ्यो नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते० किं चनाममत् स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे० अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा० मृड जीवसे स्वाहा २७ ॥

ॐ परि नो रुद्रस्य० तनयाय मृड स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम० बिभ्रद्ा गहि स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐ विकिरिद्र विलोहित० विपन्तु ताः स्वाहा ॥ ३० ॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो० मुखा कृधि स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ असंख्याता सहस्राणि० तन्मसि स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ अस्मिन् महत्यर्णवे० तन्मसि स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवᳬं० रुद्रा० तन्मसि स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽ अधः० तन्मसि स्वाहा ॥ ३५ ॥

ॐ ये वृक्षेषु० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३६ ॥
ॐ ये भूतानामधिपतयो० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३७ ॥
ॐ ये पथां पथि रक्षयऽ ऐल० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३८ ॥
ॐ ये तीर्थानि० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ३९ ॥
ॐ येऽन्नेषु० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ४० ॥
ॐ यऽ एतावन्तश्च० तन्न्मसि स्वाहा ॥ ४१ ॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि० जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४२ ॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे० जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४३ ॥
ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न० जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४४ ॥

(६) अथाष्टचत्वारिंशद्धवनमन्त्रविभागपक्षः षष्ठः ।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव० मुतते नमः स्वाहा ॥ १ ॥
ॐ या ते रुद्र शिवा० चाकशीहि स्वाहा ॥ २ ॥
ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त० पुरुषं जगत् स्वाहा ॥ ३ ॥

ॐ शिवेन त्वचसा त्वा गिरिशाच्छा० सुमनाऽ असत् स्वाहा ॥ ४ ॥

ॐ अध्यवोचदधिवक्ता० परासुव स्वाहा ॥ ५ ॥

ॐ असौ यस्ताम्रोऽ अरुणऽ उत० हेडऽ ईमहे स्वाहा ॥ ६ ॥

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो० मृडयाति नः स्वाहा ॥ ७ ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे० करन्नमः स्वाहा ॥ ८ ॥

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम्० भगवो त्वप स्वाहा ॥ ९ ॥

ॐ त्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो० निषङ्गधिः स्वाहा ॥ १० ॥

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते० परिभुज स्वाहा ॥ ११ ॥

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु० निधेहितं स्वाहा ॥ १२ ॥

ॐ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ० सहस्राक्ष शतेषुधे० सुमना भव स्वाहा ॥ १३ ॥

ॐ नमस्तऽ आयुधायाना० तव धन्वने स्वाहा ॥ १४ ॥

ॐ मा नो महान्तमुत० रुद्र रीरिषः स्वाहा ॥ १५ ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि० सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा ॥ १६ ॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे० स्वाहा । ॐ नमो बभ्लुशाय० स्वाहा । ॐ नमो-रोहिताय० स्वाहा । ॐ नमः कृत्स्नायतया० स्वाहा । ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते० निकृन्तानां पतये स्वाहा ।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १७ ॥

ॐ नमऽ उष्णीषिणे गिरिचराय० स्वाहा । ॐ नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः सभाभ्यः सभा० स्वाहा । ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च० अर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १८ ॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च० स्वाहा । ॐ नमः कपर्दिने च व्युप्तकेशाय० स्वाहा । ॐ नमो ह्रस्वाय

च न्वामनाय० स्वाहा। ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च० द्वीप्याय च स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ १९ ॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च० स्वाहा। ॐ नमः सोभ्याय च प्रति-सर्याय च० स्वाहा। ॐ नमो न्वन्याय च कक्ष्याय च० स्वाहा। ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च० स्वाहा। ॐ नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च० सुधन्वने च स्वाहा।

इति पञ्चमन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २० ॥

ॐ नमः स्रुत्याय च पथ्याय च० स्वाहा। ॐ नमः कूप्याय चावट्याय च० स्वाहा। ॐ नमो न्वात्याय च रेष्म्याय च० स्वाहा। ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च० हनीयसे च नमो न्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय स्वाहा।

इति चतुर्मन्त्राणामेकाहुतिः ॥ २१ ॥

ॐ नमः शम्भवाय च० शिवतराय च स्वाहा ॥ २२ ॥

ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च० स्वाहा। ॐ नमः सिकत्याय प्रवाह्याय च० स्वाहा। ॐ नमो ख्वज्ज्याय च गोष्ठयाय च० स्वाहा। ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च० स्वाहा। ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च० धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥ २३ ॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यः स्वाहा ॥ २४ ॥

ॐ देवानाꣳ० हृदयेभ्यः स्वाहा ॥ २५ ॥

ॐ नमो व्विचिन्वत्केभ्यः स्वाहा ॥ २६ ॥

ॐ नमो व्विक्षिणत्केभ्यः स्वाहा ॥ २७ ॥

ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यः स्वाहा ॥ २८ ॥

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते० किश्चनाममत् स्वाहा ॥ २९ ॥

ॐ इमा रुद्राय तवस० अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥ ३० ॥

ॐ सा ते रुद्र शिवा० मृडजीवसे स्वाहा ॥ ३१ ॥

ॐ परि नो रुद्रस्य० तनयाय मृड स्वाहा ॥ ३२ ॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः० बिभ्रदा गहि स्वाहा ॥ ३३ ॥

ॐ विकिरिद्र० नि वपन्तु ताः स्वाहा ॥ ३४ ॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो० मुखा कृधि स्वाहा ॥ ३५ ॥

ॐ असंख्याता० धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ३६ ॥

ॐ अस्मिन्महत्यर्णवेऽन्तरिक्षे० तन्मसि स्वाहा ॥ ३७ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ० तन्मसि स्वाहा ॥ ३८ ॥

ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वाऽ० तन्मसि स्वाहा ॥ ३९ ॥

ॐ ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा० तन्मसि स्वाहा ॥ ४० ॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो० तन्मसि स्वाहा ॥ ४१ ॥

ॐ ये पथां पथि० जनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥ ४२ ॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति॰ तन्मसि स्वाहा ॥ ४३ ॥

ॐ येऽन्नेषु विविद्ध्यन्ति॰ तन्मसि स्वाहा ॥ ४४ ॥

ॐ यऽ एतावन्तश्च भूयाᳬंसश्च॰ तन्मसि स्वाहा ॥ ४५ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि॰ तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४६ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे॰ तमेषाञ्जम्भे दध्मः स्वाहा ॥ ४७ ॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्न॰ तमेषां जम्भे दध्मः स्वाहा ॥४८॥

इति रुद्रयाग-हवनमन्त्राः ।

पुस्तक प्राप्तिस्थान—

CHAUKHAMBHA ORIENTALIA

बैंग्लो रोड, ९-यू॰ बी॰, जवाहर नगर

निकट किरोड़ीमल कालेज

दिल्ली-110007

